सम्पादक
डॉ. हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु. गुफ़रान नदवी
मु. हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
पो0 बॉ0 नं0 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522–2740406
: 0522–2741221
E-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible] 120
[illegible]	[illegible] 500
[illegible] (वार्षिक)	30 [illegible]

चेक / ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
सेक्रेटरी, मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
नदवतुल उलमा, लखनऊ, 226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एव साहित्यिक लखनऊ

अगस्त, 2010 वर्ष 09 अंक 6

हिर्स (लालच)

शहद में जैसे मगस
हम हिर्स में पाबन्द हैं
वाए ग़फ़लत इस सियह
ज़िन्दाँ में यूँ ख़ुरसन्द हैं
मक़बरों में देखते हैं
अपनी इन आखों से रोज़
ये बिरादर ये पिदर
ये ख़्वेश ये फरज़न्द हैं
तो भी रअनाई से ठोकर
मार कर चलते हैं यार
सूझता इतना नहीं सब
ख़ाक के पैवन्द हैं

(सोज़)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

Visoin Computer- +91 94510 64588, +91 90260 43858

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
बच्चियों का सलाम	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी	5
जग नायक	मौ0 (स0) मु0 राबे हसनी नदवी	6
अजान कहने की विधि अर्थ सहित	इदारा	8
रमजान के रोजे	इदारा	9
आप के प्रश्नों के उत्तर	इदारा	11
मुस्लिम समाज	मौ0 स0 मु0 राबे हसनी नदवी	13
रोजे के नये मसाइल	इदारा	16
हम कैसे पढ़ायें	डा0 सलामतुल्लाह	17
फिक्र व **अमल मे संतुलन की आवश्यक्ता**	मौ0 स0 मु0 वाजेह रशीद नदवी	19
इस्लाम तलवार से फैला या सद्व्यवहार से?	अल्लामा सै0 सुलेमान नदवी	23
भीगी यादें	नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी	25
बिल्ली की समझदारी		25
बच्चों को डरपोक न बनाएं	इन्दु उपासना	26
खवातीने इस्लाम	मौ0 अब्दुर्रहमा नग्रामी नदवी	27
सैलानी की डायरी	एम0 हसन अंसारी	30
तम्बाकू नोशी खामोश कातिल	मु0 गुफरान नदवी	32
भारत का संक्षिप्त इतिहास	सै0 अबू जफर नदवी	33
स्वतंत्रता संग्राम में मुसलमानों का योगदान	नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी	36
हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों का उच्चारण	इदारा	39
अतर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

क़ुरआन की शिक्षा

- मौ० शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर–ए–बक़रह

अनुवाद : ऐ लोगों! बन्दगी करो अपने रब की जिस ने पैदा किया तुमको और उनको जो तुम से पहले थे ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ।(21) जिसने बनाया तुम्हारे वास्ते जमीन को बिछौना और आसमान को छत और उतारा आसमान से पानी फिर निकाले उस में से मेवे तुम्हारे खाने के वास्ते, सो न ठहराओ किसी को अल्लाह के मुकाबिल और तुम तो जानते हो।1(22) और अगर तुम शक में हो उस कलाम से जो उतारा हमने अपने बन्दे पर तो ले आओ एक सूरत उस जैसी2 और बुलाओ उसको जो मददगार हो अल्लाह के सिवा अगर तुम सच्चे हो।3 (23) फिर अगर ऐसा न कर सको और हरगिज न कर सकोगे तो फिर बचो उस आग से जिस का ईंधन आदमी और पत्थर है तय्यार की गई है काफिरो के वास्ते।4(24)

तफ्सीर

1– अब सब बन्दों को मोमिन हों या काफिर या मुनाफिक, खिताब फरमा कर तौहीद समझाई जाती है जो ईमान के लिये अस्लुल उसूल है अर्थात् जो ईमान का आधार है। अर्थ का सारांश यह है अल्लाह तआला ने तुमको और तुम से पहलों को और सब को पैदा किया और तुम्हारी जरूरियात और कुल मुनाफेअ़ (लाभ) को बनाया फिर उस को छोड़ कर दूसरे को मअबूद (पूज्य) बनाना जो तुमको न नफ़अ़ (लाभ) पहुँचा सके न नुकसान (हानि) (जैसे मूर्ति) किस कदर हिमाकत (मुर्खता) और जहालत (जड़ता) है हालांकि तुम यह भी जानते हो कि उस जैसा कोई नहीं।

2– यह बात गुज़र चुकी है कि इस कलामे पाक में शुब्हे की वजह यह हो सकती थी कि इस कलामे पाक में यदि कोई बात खटके की हो तो उस के दूर करने के लिये "ला रैब फ़ीहि" (इस में कोई शक नहीं) फरमा चुके हैं और यह सूरत हो सकती है कि किसी के दिल में अपनी नासमझी या दुश्मनी में शुब्ह पैदा हो तो यह सूरत चूंकि मुम्किन (सम्भव) बल्कि मौजूद थी तो उस को दूर करने की उम्दा और सहल सूरत बयान फरमा दी कि अगर तुमको इस कलाम के इन्सानी कलाम होने का खयाल हो तो तुम भी ऐसी एक सूरत फसीह व बलीग तीन आयतों के बराबर बनाकर देखो और जब तुम फसाहत व बलागत में कमाल रखने के बावजूद एक छोटी सूरत भी नहीं बना सकते तो फिर समझ लो कि यह अल्लाह का कलाम है किसी बन्दे का कलाम नहीं। इस आयत में आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नुबुव्वत को मुदल्लल फरमा दिया।

3– यानी अगर तुम अपने दावे में सच्चे हो कि यह बन्दे का कलाम है तो जिस कदर काबिल शाअिर, फुसहा व बुलगा (हर प्रकार से योग्य कवि तथा साहित्यकार) हैं खुदा के सिवा सब से मदद लेकर ऐसी ही एक छोटी सी सूरत बना लाओ या यह मत्लब है कि खुदा के सिवा तुम्हारे जितने मअबूद (पूज्य) हैं सब से खूब रो–रो कर माँग करो कि वह इस मुश्किल बात में तुम्हारी कुछ मदद करें।

4– फिर इस पर भी तुम ऐसी एक सूरत न बना सको और यह बात यकीनी है कि तुम हरगिज न बना सकोगे तो फिर डरो और बचो दोज़ख की आग से जो सब आगों से तेज तर है जिस का ईंधन काफिर और पत्थर है जिन को तुम पूजते हो और बचने की सूरत यही है कि तुम अल्लाह के कलाम पर ईमान लाओ और वह आग उन काफिरों के वास्ते तय्यार की गई है जो कि कुर्आन शरीफ़ और नबीये करीम को झूठा कहते हैं।

❑❑

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अनुवाद : अताउल्लाह सिद्दीक़ी

अमतुल्लाह तस्नीम

हज़रत इब्ने उमर (रज़ि0) से रिवायत है कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास से होकर गुजरा, मेरा पायजामह लटका हुआ था, आप ने फ़रमाया ऐ अब्दुल्लाह (रज़ि0) अपने पायजामह को ऊँचा करो, मैंने ऊँचा किया, फिर फ़रमाया और ऊँचा, तो मैंने और उठा लिया, उस के बाद बराबर मैं ऊँचा रखने की कोशिश करता रहा, लोगों ने पूछा कि कहाँ तक रहना चाहिए मैंने कहा निस्फ पिण्डली तक। (मुस्लिम)

लिबास में तवाज़ुअ का इनआम

हज़रत मआज़ बिन अनस (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिस ने अल्लाह के लिए तवाज़ुअ के खयाल से (कीमती) लिबास छोड़ दिया और वह इस की कुदरत रखता है, यअनी जैसा चाहे पहन सकता है तो वह कयामत के दिन मजमा खलाएक के सामने बुलाया जाएगा और उस को इखतियार दिया जाएगा कि ईमान का जो लिबास पहन्ना चाहे पहने। (तिर्मिज़ी)

अल्लाह तआला की नेअमत का जहूर मेहमूद है

हज़रत उमर बिन शुऐब से रिवायत है कि वह अपने बाप से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला इस बात को पसन्द फरमाता है कि अपनी नेअमत का असर अपने बन्दह पर देखे। (तिर्मिज़ी)

मर्दों के लिए रेशम की मुमानिअ़त

हज़रत उमर (रज़ि0) बिन खत्ताब से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया रेशमी कपड़े न पहनों जिस ने उन को दुनिया में पहन लिया आखिरत में उस के लिए नहीं है। (बुख़ारी,मुस्लिम) हज़रत उमर (रज़ि0) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है फरमाते थे जो रेशम का लिबास पहनता है उस के लिए आखिरत में हिस्सा नहीं है। (बुख़ारी,मुस्लिम) हज़रत अनस (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जो रेशम का लिबास दुनिया में पहनेगा उसको आखिरत में पहन्ना नसीब न होगा। (बुख़ारी,मुस्लिम)

रेशम और सोना मर्दों के लिए नहीं

हज़रत अली (रज़ि0) से रिवायत है कि मैंने देखा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रेशम को लेकर अपनी दाहनी जानिब रखा और सोना लेकर बाएं तरफ रखा, फिर फ़रमाया, यह दोनों चीजें मेरी उम्मत के मर्दों पर हराम हैं। (अबूदाऊद) हज़रत अबू मूसा अशअरी से रिवायत कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया रेशम का लिबास और सोना मेरी उम्मत के मर्दों पर हराम है और औरतों पर हलाल है। (तिर्मिज़ी) हज़रत हुजैफा (रज़ि0) से रिवायत है कि हम को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सोने चाँदी के बरतन में खाने पीने से और रेशम व देबाज के कपड़ों पर बैठने से मना फ़रमाया है। (बुख़ारी)

खारिश के मरीज़ के लिए इजाज़त

हज़रत अनस (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत जुबैर (रज़ि0) और हज़रत अब्दुर्रहमान (रज़ि0) बिन औफ को खारिश की वजह से रेशमी कपड़े पहन्ने की इजाज़त फरमाई थी। (बुख़ारी–मुस्लिम)

रेशम और चीते की खाल पर बैठने की मुमानिअत

हज़रत मआविया (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रेशम और चीते की खाल पर बैठने से मना फ़रमाया है। (अबूदाऊद) हज़रत अबू मलीह (रज़ि0) से रिवायत है कि वह अपने बाप से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शेष पृष्ठ 7

बच्चियों का सलाम

डॉ० हारून रशीद सिद्दीक़ी

घुटनों में कुछ दर्द रहता है, दाहिनी आँख के ऑप्रेशन का दूसरा हफ़्ता है। काला चश्मा लगाए छड़ी टेकता मग़रिब से आध घंटा पहले मस्जिद जा रहा था। रास्ते में छोटी–छोटी चार–चार, पाँच–पाँच साल की तीन बच्चियाँ खेल रही थीं मुझे देख कर मेरी तरफ़ बढ़ीं और मुझे सलाम किया, मैंने ने सलाम का जवाब दिया और खयाल आया कि इनकी दीनदारी माँ ने जरूर इन को सिखाया है। फिर मैं एक गहरे खयाल में डूब गया। यह भ्रूण हत्या (रहिमे मादर में कत्ल) से बच गईं क्यों न बचतीं यह तो मुसलमान घर की बच्चियाँ हैं जहाँ बच्चियों के पालन पोषण तथा शिक्षा दीक्षा (परवरिश व तरबीयत) पर जन्नत का वअ़दा है।

जन्नत क्या है? यह संसार अस्थाई है क्षणिक है। यहाँ आदमी अधिक से अधिक सौ वर्ष या उस के आस पास जीवित रहता है। मरने के पश्चात उस की आत्मा हजारों वर्ष बरज़ख़ में रहेगी, वहाँ भी अपने *कर्मानुसार* सुख या दुख में रहेगी, फिर कियामत आएगी सभी आत्माएं अपने शरीर के साथ अल्लाह के दरबार में उपस्थित होंगी, सांसारिक कर्मों का लेखा जोखा होगा उस के पश्चात केवल दो स्थान होंगे जन्नत या जहन्नम, जहन्नम में हर प्रकार का दुखद दण्ड होगा, परन्तु जन्नत में हर प्रकार का सुख होगा, जो जहन्नम से बचा कर जन्नत में भेजा जाएगा वह सफल होगा जो जन्नत में जाएगा सदैव वहीं रहेगा जन्नत से कभी निकाला न जाएगा, जन्नत में ऐसा सुख होगा जिसे मानव सोच भी नहीं सकता। अब बताएं जिस काम पर जन्नत का पुरस्कार मिले उसमें मुसलमान कोताही कैसे करेगा? अतः एक सच्चा मुसलमान बच्ची के जन्म पर प्रसन्न होता है और उसके पालन पोषण तथा शिक्षा–दीक्षा में कोताही नहीं करता।

फिर बच्चियों में प्राकृतिक प्रेम होता है, यह प्रेम भाई बहनों, माता, पिता के मन को अपनी ओर खींचता है फिर सब उस से प्रेम करने लगते हैं। जवान होने पर एक प्रेम और उभरता है जिस की पूर्ति के लिये विवाह आवश्यक होता है।

निकाह के पश्चात जब बच्ची ससुराल जाती है तो उसका नया जीवन आरंभ होता है। अब अगर पति पत्नी में प्रेम हुआ तो बच्ची के लिये ससुराल साँसारिक जन्नत बन जाती है, परन्तु यदि पति का प्रेम कहीं और बंटा होता है या पतिदेव और उन के घर वाले लोभी होते हैं और लड़की से माँग शुरू करते हैं तो लड़की का जीवन साँसारिक नरक होके रह जाता है फिर तो पति पत्नी को मारता पीटता तथा नाना प्रकार के कष्ट देता है यहाँ तक कि मिट्टी का तेल या पेट्रोल छिड़क कर अग्नि को सौंप देता है। यह वही लड़की है जिस ने चहीते भाई, बहन, माता–पिता को छोड़ कर धार्मिक आदेशानुसार अपने को एक नये व्यक्ति को समर्पित किया था जिसका बदला यह मिला। मुसलमानों में यह विकार नहीं था परन्तु अब कुछ ईमान में कच्चे मुसलमानों में भी यह देखने को मिल रहा है।

कुछ कामी लोगों ने नारी स्वतंत्रता की कुव्याख्या कर के कुछ बहन बेटियों को भ्रष्ट किया और वह अत्याचारों से स्वतंत्रता प्राप्त करने के स्थान पर पति के बन्धनों से स्वतंत्रता को स्वतंत्रता समझ बैठीं। याद रहे इस तथाकथित पश्चिम नारी स्वतंत्रता की आयु केवल 15 से 40 वर्ष तक है और यह स्वतंत्रता सभी प्राकृतिक प्रेमों को यहाँ तक कि अपनी संतान के प्रेम को भी नष्ट कर देती है। पच्चास के पश्चात ऐसी स्त्रियाँ सुख की निद्रा से वंचित हो जाती हैं और कभी–कभी तो आत्म हत्या पर उतर आती हैं, यह दशा तो उन की इस संसार की है मरने के पश्चात वह बरज़ख़ में कब्र के अज़ाब से

शेष पृष्ठ 7

किस्त : 19

जगनायक

हज़रत मौलाना मुहम्मद राबे हसनी नदवी

अनुवाद मु० गुफ़रान नदवी

वही (ईश्वरीय वाणी) का आरंभ, बेसत और दअ्वत व तबलीग़

पहली वही : वही इलाही का आरंभ इस तरह हुआ कि जब आपकी उम्र चालिस साल की हुई तो अल्लाह तआला की तरफ से उसके फरिश्ते हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम को आपके पास भेजा गया, उस वक़्त आप अपनी तन्हाई के लिये करीबी पहाड़ जबले नूर के ऊपर ''ग़ारे हिरा'' में थे, हज़रत जिबरईल गारे हिरा में पहुँचे और आपको पहला आसमानी पैगाम पहुँचाया और उसके ज़रिये नुबुव्वत के मन्सब की शुरूआत हुई, और यह पहला आसमानी पैगाम इल्म के तजकिरे (उल्लेख) से शुरू हुआ जो एक उम्मी (अनपढ़) को जो शिक्षा के प्रचलित तरीके से नहीं गुजरा था, इल्म को अल्लाह तआला के नाम से जोड़ने की ताकीद के साथ था, जिससे उस वक़्त तक अपने को अलग रखे हुए था। जब आप (सल्ल0) पर ''वही'' उतरी तो शुरू में आप को खौफ़ महसूस हुआ, क्योंकि वह आसमानी बुलन्दी व बड़ाई की बिना पर अपना खास वजन रखती थी, आप को उसकी अजमत (महानता) का बोझ इतना महसूस हुआ कि ख़्याल होने लगा कि उसको किस तरह संभालेंगे और कैसे निबाह सकेंगे, लेकिन अल्लाह तआला जिसने इस बड़ी जिम्मेदारी का बोझ डाला था जानता था कि उसकी शख्सियत (व्यक्तित्व) में बरदाश्त और हिम्मत की सलाहियत ऐसी अता की जा चुकी है कि यह इस बोझ को सिर्फ यही नहीं कि उठा सकेंगे, बल्कि उसका पूरा हक अदा कर सकेंगें।

रमजान में ''वही''का नुजूल

यह पहली ''वही'' 27 रमजान को उतरी जो अल्लाह तआला के अलफाज में थी और कुर्आन मजीद की सूरतों में से सूरह ''इक़रा'' की पहली आयत करार पाई, उस ''वही'' में पढ़ने का हुक्म था, उसके ज़रिये आपको जबकि आप उस वक़्त तक उम्मी थे, अर्थात लिखना पढ़ना नहीं जानते थे, कहा गया कि पढ़िये, लेकिन पढ़ने के हुक्म के साथ पढ़ने को परवरदिगार आलम के नाम से जोड़ने और उस पर यकीन करने का भी हुक्म हुआ कि तुम्हारा रब बहुत–बहुत करीम है, यह मूल रूप में अल्लाह तआला के शब्दों में आने वाली पहली ''वही'' थी जो बअद में मुसलसल (निरन्तर) आती रही यहाँ तक कि कुर्आन मजीद की पूरी किताब बन गई। उसमें इस्लाम और मुसलमानों के हालात और जरूरियात की बातें और हिदायात (आदेश) थीं, जिनके ज़रिये इस्लाम की शरीअत बनी। इस कुर्आनी ''वही'' के अलावा और तरीकों से भी ''वही'' आने लगी जो कभी ख्वाब के ज़रिये और कभी मुकद्दस फरिश्ता हज़रत जिबरईल अपने अल्फाज़ में अल्लाह तआला का पैगाम पहुँचाते और इस तरह वही–ए–इलाही का सिलसिला जारी हो गया और नुबुव्वत के काम की हिदायात आप के पास आने लगीं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ौज–ए–मुतह्हरा हज़रत आएशा रजीअल्लाह अन्हा आपके पास पहली ''वही'' आने का हाल इस तरह बयान करती हैं कि जब गारे हिरा में इबादत और गौर व खौज (मनन व चिन्तन) में एक मुद्दत गुजारने के बअद ''वही'' आने का वक़्ते मुकर्ररह (निश्चित) आ गया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास फरिश्ता आया और उसने कहा : पढ़िये, आपने कहा मैं पढ़ने का काम नहीं जानता, फरमाते हैं उस फरिश्ते ने मुझको पकड़ लिया और जोर से भींचा (दबाया) फिर मुझको छोड़ दिया और कहा पढ़िये, उसपर मैंने यही कहा कि मैं पढ़ने का जानने वाला नहीं हूँ, फ़रमाया उसने फिर मुझको पकड़ा और जोर से दबाया कि मैं बहुत थक गया, फिर मुझको छोड़ा और कहा पढ़िये, मैंने कहा कि मैं पढ़ने का जानने वाला नहीं हूँ, इस पर उसने मुझको फिर पकड़ा और तीसरी बार भी

जोर से दबाया फिर मुझको छोड़ा और अल्फाज़ (शब्द) कहे –

"पढ़िये अपने रब के नाम से जिसने दुनिया को पैदा किया, जिसने आदमी को गोश्त के लोथड़े से पैदा किया, पढ़िये आप का रब बहुत करीम (उदार) है वह जिसने इन्सान को कलम के ज़रिये इल्म सिखाया वह जिसने इन्सान को वह बाते सिखाईं जो उसे मअलूम न थीं"।

(सूरह इकरा : 1–5)

इसके बअद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इन आयात के साथ जो फरिश्ते ने पढ़ाई थीं घर लौटे, आप पर इतना बोझ और असर हो गया था कि दिल काँप रहा था, अपनी जौजा मुहतरमा हज़रत खदीजा रज़ि अल्लाहु अन्हा के पास पहुँचे और फ़रमाया : मुझे उढ़ाओ तो उनको उढ़ा दिया गया, यहाँ तक कि आप पर जो परेशानी तारी (छाई) हुई थी वह दूर हुई। फिर आपने हज़रत खदीजा (रज़ि0) को अपना हाल सुनाया और इस वाकिये (घटना) का और उसके बड़े बोझ को महसूस करने का और अपने खौफ का तज़किरा (उल्लेख) किया और कहा कि मुझे डर हो रहा था कि जान न चली जाए, तो उन्होंने दिल बढ़ाया और कहा" हरगिज नहीं, खुदा की कसम है अल्लाह आपको हरगिज रूसवा (अपमानित) नहीं करेगा, बेशक आप का हाल तो यह है कि आप रिश्तेदारों के जो हुकूक हैं उनको पूरी तरह अदा करते हैं और किसी को परेशान और थका हुआ देखते हैं तो उसका सामान उठाकर पहुँचा देते हैं और कोई भूखा और परेशान हाल हो तो कमाई करा देते हैं और मेहमान आ जाए तो पूरी खातिर करते हैं, अचानक मुसीबत पर मुसीबत वालों की मदद करते हैं"।

❑❑

बच्चियों का सलाम

दो चार होगीं फिर कियामत के पश्चात यदि उन के लिये जहन्नम का आदेश हुआ तो कहीं की न रहेंगी। यह सब सोच कर इन बच्चियों के विषय में तथा अपने घर की बच्चियों के विषय में खयाल आने लगा कि देखो इन बेचारियों का क्या परिणाम होता है।

हमारे वश में केवल इतना है कि हम बच्चियों का अच्छा पालन पोषण करें, उन को साँसारिक शिक्षा से कहीं अधिक धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा दें उन की खूब देख–रेख रखें। उनको अपने प्रेम तथा स्वभाव से सुखी रखें जब जवान हो जाएं तो उन की अनुमति से किसी दीनदार स्वस्थ, शिक्षित तथा अच्छे स्वभाव के युवक से निकाह कर दें और उनको दुआएं दें। यह अलग बात है कि यदि आप निर्धन हैं तो दीनदार लड़का भी आप को नज़र अन्दाज़ करेगा ऐसी दशा में दुखी न हों धैर्य से काम लें तक़दीर का लिखा हो के रहेगा।

❑❑

प्यारे नबी की प्यारी बातें

दरिन्दों की खाल पर बैठने से मना फ़रमाया। (अबूदाऊद– तिर्मिजी) तिर्मिज़ी की एक और रिवायत में यह भी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दरिन्दों की खाल बिछाने से भी मना फ़रमाया है।

कपड़ा पहन्ने की दुआ

हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब नया कपड़ा पहनते तो उसका नाम लेकर फरमाते थे ख्वाह वह अमामह हो या क़मीस या चादर, "ऐ अल्लाह तेरी ही तारीफ है कि तूने मुझे यह कपड़ा पहनाया और मैं तुझ से इस की भलाई चाहता हूँ और उस चीज की जिसके लिए यह बनाया गया और उस की बुराई से पनाह माँगत। हूँ और उस चीज की बुराई से जिस के लिए यह बनाया गया।

(अबूदाऊद–तिर्मिजी)

❑❑

तम्बाकू नोशी .....

थाई राईड ग्लेन्टस : तम्बाकू में मौजूद साईनाईड, थाईराईड ग्लेन्टस को बुरी तरह प्रभावित करता है।

बहरहाल सिगरेट पीने वाले लोगों को खुद फैसला करना चाहिये कि उनके लिये भलाई, सफलता, स्वास्थ्य, निरोग का मार्ग उत्तम है अथवा समय, पैसा, और स्वास्थ्य की हानि का? निर्णय आपके हाथ में है।

(18 अप्रैल 2010 दैनिक राष्ट्रीय सहारा ऊर्दू से साभार)

❑❑

अज़ान कहने की विधि अर्थ सहित

- इदारा

अज़ान के वाक्य

अल्लाहु अक्बर्, अल्लाहु अक्बर्
अल्लाहु अक्बर्, अल्लाहु अक्बर्
अश्हदुअल्ला इलाह इल्लल्लाह्
अश्हदुअल्ला इलाह इल्लल्लाह्
अश्हदुअन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह्
अश्हदुअन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह्
ह़य्य अलस्सलाह्
ह़य्य अलस्सलाह्
ह़य्य अ़लल्फलाह्
ह़य्य अ़लल्फलाह्
अल्लाहु अक्बर्, अल्लाहु अक्बर्
ला इलाह इल्लल्लाह्

पढ़ने के नियम के साथ अज़ान कहने की विधि

यह वाक्य इसी प्रकार अलग–अलग एक–एक सांस में कहे जाते हैं, आवाज़ ऊँची करने के लिये दोनों कानों में उंगली लगा लें।

अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर, यह दोनों वाक्य एक सांस में इस प्रकार कहें कि पहले अल्लाहु में ला को जरा खींचें, आवाज़ ऊँची रखें, दूसरे अल्लाहु के ला को कुछ अधिक खींचें, अक्बर, के अन्त में र को हलन्ती (साकिन) पढ़ें, इसी प्रकार अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर, को दोहराएं।

अर्थ : अल्लाहु अक्बर : अल्लाह सब से बड़ा है।

अब कहें : अशहदु अल्ला इलाह इल्लल्लाह् इस वाक्य में तीन ला आए हैं, पहले ला को खींचें, दूसरे ला को उस से कम खींचें तीसरे ला को भरपूर खींच कर आवाज़ पैदा करें परन्तु न आवाज़ को लहराएं न गाने की तरह गाएं। बीच में इलाह के ह की आवाज़ पृथक ह की भांति निकालें परन्तु ह की आवाज़ हा न निकालें, इल्लल्लाह् के अन्तिम ह को हलन्ती (साकिन) पढ़ें।

इसी प्रकार दोबारा कहें "अश्हदु अल्ला इलाह इल्लल्लाह्।"

अर्थ : मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं है।

अब कहें : "अश्हदुअन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह।"

इस वाक्य में डबल (मुशद्द) न को जरा नाक में रोकें और दूसरे न को पृथक की भांति पढ़ें ना की भांति न पढ़ें, मुहम्मद के डबल (मुशद्द) म को भी जरा नाक में रोकें, और रसूल्लाह के ला को खीचें तथा ह को हलन्ती (साकिन) पढ़ें। इसी प्रकार पुनः कहें "अश्हदुअन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह"

अर्थः मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं।

अब दाहिनी ओर मुंह घुमा कर "ह़य्य अलस्सलाह्" कहें ह़य्य के अन्तिम य को पृथक य की भांति पढ़ें या की भांति न पढ़ें, अलस्सलाह् के ला को खींच कर आवाज़ पैदा करें अन्त के ह को हलन्ती (साकिन) पढ़ें, इसी प्रकार फिर कहें "ह़य्य अलस्सलाह्"

अर्थ : आओ नमाज के लिये।

अब बाईं ओर मुंह घुमा कर कहें : ह़य्य अलल् फ़लाह्। ह़य्य वैसे ही पढ़ें जैसे पहले बताया जा चुका फलाह के ला को खींचे और ह को हलन्ती (साकिन) पढ़ें। यह याद रहे ह़य्य अलस्सलाह् के अन्त में ह् है और ह़य्य अलल् फलाह के अन्त में ह् है। अब फिर उसी प्रकार "ह़य्य अलल् फलाह दोहराएं।

अर्थ : आओ सफलता प्राप्ति के लिये।

अब फिर पहले की भांति एक सांस में अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर, कहें। अन्त में ला इलाह इल्लल्लाह कहें इस में भी पहले ला को अधिक खींचे दूसरे को कुछ कम तीसरे को अधिक।

यह अज़ान ज़ुहर, अस्र, मगरिब और इशा की हुई, फज्र की अजान में ह़य्य अलल फलाह के पश्चात दो वाक्य और पढ़ेंगे।

अस्सलातु ख़ैरुम्मिनन्नौम् (एक सांस में)

अस्सलातु ख़ैरुम्मिनन्नौम् (दोबारा)

अस्सलातु के ला को खींचे

शेष पृष्ठ 22

रमज़ान के रोज़े

ऐ ईमान वालों तुम पर रोजा फर्ज किया गया जैसे तुम से पहले के लोगों पर फर्ज किया गया था ताकि तुम अल्लाह से डरने वाले और उस का लिहाज करने वाले यानी मुत्तकी बन जाओ। (2:183)

यह सूर–ए–बकरह की आयत का मफहूम है। इस से ज्ञात हुआ कि रोजा मुसलमानों पर फर्ज है और यह गुजरी हुई उम्मतों पर भी फर्ज था, आज भी हिन्दू हजरात में व्रत और उपवास की शक्ल में मौजूद है। यहाँ रोजे का एक खास मकसद व फाइदा भी बयान किया गया वह यह कि तुम्हारे अन्दर तकवा पैदा हो जाए जो एक ईमान वाले की लाजिमी सिफत होनी चाहिये।

आगे आयत 185 में बताया गया कि "रमजान का महीना वह महीना है जिस में कुर्आन उतारा गया जिस में लोगों के लिये हिदायत है और हिदायत की खुली हुई दलीलें हैं और यह कुर्आन हक़ व बातिल में फैसला करने वाला है अतः जो इस महीने को पाए, इस में रोजा रखे अलबत्ता मरीजों और मुसाफिरों के लिये इजाजत है कि वह इन दिनों में रोजा न रख पाएं तो दूसरे दिनों में कजा कर लें। "अल्लाह तआला को तुम्हारे लिए आसानी पैदा करना मंजूर है, तुम को तंगी में नहीं डालना चाहता है ताकि तुम रमजान के रोजों की गिन्ती पूरी कर लो और ताकि तुम अल्लाह की बड़ाई बयान करो इस पर कि उस ने तुम को हिदायत दी और ताकि तुम अल्लाह का शुक्र करो।"

ऊपर की आयत में रोजों की फर्ज़ियत की खबर दी गई है। इस आयत में रमजान के रोजों की फर्ज़ियत को वाजेह (स्पष्ट) किया गया। अतः हर आकिल बालिग मुसलमान पर रमजान के रोजे फर्ज़ हैं।

मुसाफिर जिस का सफर 48 मील (78कि0मी0) से कम न हो वह अगर सफर के दिनों में रोजा न रखे बाद में कजा कर ले तो यह जाइज है लेकिन रख सके तो सफर में भी रमजान के रोजे रखे। हामिला (गर्भवती) औरत और दूध पिलाने वाली औरत के लिये भी जाइज है कि वह उस हालत में रोजे न रख कर बाद में कजा कर ले लेकिन अगर किसी नुकसान का खतरा न हो तो रमजान के रोजे कजा न करे। बीमार भी अगर बीमारी के सबब रमजान के रोजे न रख सके तो बाद में कजा कर सकता है, ऐसा बीमार जिस के सिहतयाब होने की उम्मीद न हो रोजों का फिदया अदा कर सकता है। इसी तरह ऐसा बूढ़ा जिस में अब ताकत लौटने की उम्मीद नहीं अपने रोजों का फिदया दे सकता है, जिस शख्स में या उस के घर वालों में फिदया देने की सकत नहीं अल्लाह तआला उसे मुआफ करेंगे। रमजान के रोजों का फिदया देने के लिये बेहतर होगा कि किसी मुहताज रोजेदार को इफ्तार व सहर में दोनों वक़्त पेट भर खाना खिलाए या एक रोजे के बदले में एक किलो 600 ग्राम गेहूँ या उस की कीमत मुहताज मुसलमान को अदा करे। हैज व निफास की हालत में औरत रोजा नहीं रख सकती बाद में कज़ा करे। रोजे की हालत में कोई चीज हलक के नीचे उतर गई या नाक में दवा डाली तो रोजा टूट गया कजा लाजिम होगी। अगर किसी ने रमजान का रोजा किसी उज्र के बिना खाने पीने वाली चीज से खा–पी कर तोड़ दिया या औरत से हम बिस्तरी कर ली तो बड़ा गुनाह किया इस रोजे के बदले में एक रोजा भी रखे और सजा के तौर पर साठ रोजे मुसलसल रखे या साठ मिस्कीनों को दोनों वक़्त खाना खिलाए या साठ रोजों का फिदया अदा करे। याद रहे कोई अगर भूल कर खा पी ले तो इससे उस का रोजा न टूटेगा।

नियत : रोजा रखने के लिये नीयत जरूरी है नीयत के बिना रोजा नहीं हो सकता, रमजान के रोजों की नीयत रोजाना जरूरी है। रमजान के रोजे की नीयत मगरिब बाद से सुब्ह को जवाल से पहले तक की जा सकती, मगरिब से पहले दूसरे दिन की या जवाल के बाद उसी दिन की नीयत दुरुस्त न होगी। बेहतर यह है

कि तुलूअे सुब्हे सादिक से पहले नीयत कर ले। मगरिब बाद दिल में सोच लेना कि सुब्ह को रोजा रखूंगा या सुब्ह को दिल में इरादा कर लेना कि आज मैं रोजा रखूंगा काफी है जबान से कहना जरूरी नहीं लेकिन अगर जबान से कह ले तो कोई हरज नहीं। अरबी में जो बाज लोग "नवैतु बि सौमि गदिन" कहते हैं तो यहाँ "गदिन" का अर्थ कल नहीं सुब्ह लिया जाना चाहिये या उर्फे आम में शाम के वक़्त मगरिब के बाद आने वाली सुब्ह से शाम तक को कल बोलते हैं वरना मगरिब से लेकर अगले गुरूबे आफताब तक एक ही दिन है रात उसके बाद आएगी जिस की पेशगी नीयत नहीं हो सकती। सहरी खाना भी रोजे की नीयत है।

गुनाहों से तो हमेशा बचना चाहिये लेकिन रमजान में जियादा बचें। लड़ाई झगड़े से बचने की इन्तिहाई कोशिश करें, अल्लाह तौफीक दे वुसअत के लिहाज से रमजान में खैर खैरात बढ़ा दें। अगर आप साहिबे निसाब हैं तो अगर जकात का हिसाब रमजान में करें तो बहुत अच्छा रहेगा कि रमजान में हर इबादत का सवाब सत्तर गुना मिलता है। अगर सदक–ए–फित्र जो ईद के रोज वाजिब होता है 27,28 रमजान को अदा कर दें तो यही नहीं कि वाजिब अदा होगा बल्कि सत्तर गुना सवाब मिलेगा।

तरावीह : रमजान में इशा की फर्ज और दो सुन्नतों के बाद बीस रकआत तरावीह पढ़ी जाती है इसे जमाअत से अदा करने का एहतिमाम करें, तरावीह में एक कुर्आन खत्म करना सुन्नते मुअक्किदा है इस का एहतिमाम करें। जो हुफ्फाज पैसे तै कर के कुर्आन सुनाते हैं उन के पीछे तरावीह पढ़ने के बजाए छोटी सूरतों से बीस रकआत पूरी कर लें। अलबत्ता तै न करें तो उन की खिदमत में हदीया पेश करने में कोई हरज नहीं उन के पीछे तरावीह पढ़ें।

अहले हदीस हजरात आठ रकआत तरावीह पढ़ते हैं अगर उन के पीछे पढ़ने का इत्तिफाक हो तो आप भी आठ पढ़ लें अब आप चाहें तो अलग से बीस पूरी कर लें लेकिन उन से उलझे नहीं इसी तरह अगर वह आप को आठ पढ़ने की तरगीब दें तो आप उसे कबूल न करें आप अगर दलील न जानते हों तो किसी हनफी आलिम से समझ लें । मालूम रहे कि हरमैन शरीफैन में बीस रकआत तरावीह पढ़ी जाती है।

एअतिकाफ़ : अल्लाह तौफीक दे तो आप 20 रमजान को मगरिब के वक़्त एअतिकाफ़ की नीयत से मस्जिद में दाखिल हो जाएं और शरअी जरूरतों के सिवा ईद का चान्द दिखने तक मस्जिद में गुजारें। यह वक़्त इबादात में गुजारें। एअतिकाफ़ सुन्नत अलल किफाया अगर बस्ती का एक शख्स कर ले तो सब की तरफ से सुन्नत अदा हो जाएगी अगर किसी ने एअतिकाफ़ न किया तो सब पर सुन्नत छोड़ने का गुनाह होगा।

❑❑

मुस्लिम समाज .....

इसलिये हमारे आधुनिक पाठयक्रम को भी इस्लामी मूल्यों के अनुसार ढ़ालना होगा ताकि इस के पढ़ने वाले अपनी इस्लामी सोच को बरकरार रख सकें। इस की अपेक्षा हमारी मजहबी शिक्षा–व्यवस्था मुसलमानों के दीनी और कलचरल मिजाज की पूरी तरह हिफाजत करने वाला पाठयक्रम है। इस के मुकाबले में पश्चिम का दिया हुआ पाठयक्रम प्राकृतिक विषयों के दायरे में तो नकारात्मक असर नहीं डालता, अतः उसे प्रोत्साहित करना चाहिये। लेकिन इसकी भाषा, सामाजिक और हयूमिनिटीज (मानव– विज्ञान) का अंश भौतिकवादी और नास्तिक मिजाज देने वाला है और वह हमारे मिल्ली मकासिद और मूल्यों के विपरीत है।

यही वह असल वजह है जो हमारे दीनी मदरसों के लिये आधुनिक पाठयक्रम व शिक्षा–व्यवस्था से सहज फायदा उठाने में रूकावट बनती है। और जब तक दोनों शिक्षा–व्यवस्थायें अपने में सुधार नहीं लायेंगी, दोनों में एका पैदा नहीं हो सकेगा। अतः पाठयक्रम में सुधार की जरूरत सेकुलर संस्थाओं के लिये भी है ताकि मुसलमानों की नई नस्ल की मजहबी पहचान समाप्त न हो और वह अपने मजहब से अनभिज्ञ न रहें।

(जारी.....)

❑❑

? आपके प्रश्नों के उत्तर ?

– इदारा

प्रश्न : बरज़ख़ क्या है? वहाँ इन्सान की क्या हैसियत होगी?

उत्तर : बरज़ख़ का आलम मौत के बाद ही शुरू हो जाता है। बरज़ख़ में इन्सान को कर्म का मौका नहीं मिलता। बल्कि दुनिया में जिन अच्छे और बुरे कर्मों को उसने किया है उसके अच्छे और बुरे बदले का थोड़ा–सा इशारा सामने आ जाता है। दुनिया से जुदा होने के समय से लेकर कयामत के आने तक आदमी बरज़ख़ में रहता है। मर जाने के बाद आदमी पूरी तरह खत्म नहीं हो जाता है। उसकी रूह बाकी रहती है। रूह को आराम और तकलीफ का एहसास होता है।

दुनिया की जिन्दगी में कब्र और बरज़ख़ को समझना बहुत मुश्किल है। इसकी हकीकत अल्लाह की हिदायत और नबी (सल्ल0) की तालीम के जरिये हासिल हुई है। लेकिन मानव बुद्धि सीमित है, वह इसे नहीं समझ सकती। संभव है भविष्य में मनुष्य विज्ञान के क्षेत्र में इतना विकास प्राप्त कर ले कि उसके आधार पर उसके लिए इसे समझना संभव हो सके। इसलिए कि कितनी ही ऐसी वास्तविकताएं हैं, जो कुर्आन में प्रस्तुत की गयी हैं और सदियों तक मनुष्य उसे नहीं समझ पाया किन्तु बाद में वैज्ञानिक खोजों एवं अन्वेषणों के आधार पर उसे समझा जा सका।

मौत रूह को शरीर से अलग कर देती है और शरीर सड़–गल कर समाप्त हो जाता है। लेकिन रूह इन्सान के पूरे व्यक्तित्व के साथ जीवित रहती है। उसे अपने सभी अच्छे और बुरे कर्मों का एहसास होता है। बुरे कर्मों का अंजाम उसकी नजरों के सामने होता है और भले कर्मों का नतीजा भी उसे मालूम हो जाता है।

इसकी तुलना ख़्वाब से की जा सकती है। दुनिया में एक कातिल और अपराधी अदालत में पेश होने से पहले वाली रात में ख़्वाब देखता है कि उसे फाँसी के तख़्ते पर लटकाया जा रहा है। इसी प्रकार एक भला आदमी जिसने भलाई और कल्याण के काम किये हैं उसे सरकार की ओर से सम्मानित किया जाने वाला है। इनाम मिलने से पहले वाली रात में वह ख़्वाब देखता है कि उसका स्वागत किया जा रहा है और उसे इनाम दिया जा रहा है। बरज़ख़ को इन दो तरह के लोगों के ख़्वाब से समझा जा सकता है।

कई आयतों और हदीसों से बरज़ख़ में होने वाले अजाब और सवाब का सबूत मिलता हैं आमतौर से कब्र का शब्द बरजख के लिए ही इस्तेमाल किया जाता है। सच्चाई यह है कि जीवन की आखिरी साँस से ही बरज़ख़ की शुरुआत हो जाती है और यह उस समय तक जारी रहेगा जब इन्सान अपनी कब्रों से निकल कर अल्लाह के सामने हाजिर होगे। इस पूरी अवधि में इन्सान की रूह आलमे बरज़ख़ में रहेगी। बरज़ख़ में आराम और तकलीफ का पता कुर्आन की इन आयतों से चलता है –

"अंततः उन लोगों ने जो बुरी से बुरी चालें उस ईमान वाले के विरुद्ध चलीं, अल्लाह ने उन सबसे उसको बचा लिया, और फिरऔन के साथी स्वयं अत्यंत बुरी यातना के फेर में आ गये। दोजख की आग है जिसके सामने वे प्रातःकाल और संध्या को पेश किये जाते हैं, और जब पुनर्जीवन की घड़ी आ जाएगी तो आदेश होगा कि फिरऔन के लोगों को कठोरतम यातना में दाखिल करो।" (कुर्आन, 40:45–46)

हदीस में आता है कि नबी (सल्ल0) ने फ़रमाया तुम में से जो व्यक्ति भी मरता है उसे सुबह और शाम उसका अन्तिम ठिकाना दिखाया जाता है। चाहे वह जन्नती हो या दोजखी। उससे कहा जाता है कि जब कयामत आएगी तो तुझे वहाँ भेजा जाएगा।

प्रश्न : गर्भनिरोधक तरीकों को अपनाना कैसा है?

उत्तर : मौजूदा समय में बच्चों की संख्या में वृद्धि न हो इस उद्देश्य से कुछ विशेष प्रकार का रबड़ प्रयोग किया जाता है। इनमें एक तो वह होता है, जिसे पुरुष इस्तेमाल करते हैं। इसे निरोध कहते हैं। दूसरा वह होता है, जिसे महिला प्रयोग कर सकती है। इसे लूप कहते हैं। ये तरीके हालांकि नये हैं, मगर चूंकि कम बच्चों की पैदाइश का जज्बा बहुत पुराना है, इसलिए हमें इस्लाम के आरंभिक काल में भी इसकी मिसालें मिली हैं।

इस्लाम के पहले लोग इसके लिए अज्ल का तरीका अपनाते थे। इसका अर्थ यह है कि सहवास के दौरान जब पतन का समय आये तो पुरुष अपने अंग विशेष को बाहर निकाल ले। मगर ऐसा करना कैसा है इस बारे में हदीसें अलग–अलग हैं। कुछ हदीसों में इसे उचित ठहराया गया है बशर्ते कि पत्नी की अनुमति से हो। ज्यादातर हदीसों में इसे मकरूह (नापसन्दीदा) बताया गया है। कुछ हदीसें ऐसी भी हैं, जिससे इसका हराम होना साबित है।

ज्यादा सही बात यह है कि बिना किसी कारण के अज्ल करना ठीक नहीं। खासतौर से उस समय जब केवल आर्थिक तंगी के कारण संतान से बचने का उद्देश्य हो इससे पता चलता है कि निरोध और लूप का प्रयोग मकरूह है। खासतौर से उस समय जब इसका कारण आर्थिक तंगी का एहसास हो। हाँ अगर कोई मुनासिब कारण हो तो ऐसा किया जा सकता है। जैसे दूध पीते बच्चे के दूध से वंचित हो जाने का डर हो या गर्भ धारण में महिला को सामान्य से अधिक खतरा हो। लेकिन ऐसी हालत में भी निरोध का प्रयोग करने से पूर्व पत्नी से अनुमति ले लेनी चाहिए। अज्ल के मामले में भी यही हुक्म है, इसलिए कि महिला की संतुष्टि इससे प्रभावित होती है।

गर्भ नियंत्रण का दूसरा तरीका यह है कि मनी तो महिला के गर्भाशय में पहुँच जाए, मगर ऐसी दवाओं का प्रयोग किया जाए कि गर्भधारण नहीं होने पाये। यह तरीका भी आम हालात में नाजाइज है। यह सही है कि वह तरल पदार्थ अभी जीवन और आत्मा से खाली है, इसलिए इसे बर्बाद कर देना हत्या नहीं कही जाएगी, लेकिन अगर इसको अपनी हालत पर छोड़ दिया जाता तो कुछ समय गुजरने पर वही एक जीवित मनुष्य का रूप धारण कर लेता।

अर्थात गर्भनिरोधक गोलियों का प्रयोग जाइज नहीं है। खासतौर से सिर्फ औलाद से बचने के मकसद से इनका प्रयोग गुनाह है।

प्रश्न : अदालती निकाह की शरई हैसियत क्या है? क्या तहरीर के जरिये भी निकाह हो सकता है, अगर किसी कागज पर दोनों पक्षों के हस्ताक्षर और दो गवाहों के हस्ताक्षर ले लिए जाएं?

उत्तर : अदालत के जरिये निकाह की सूरत यह है कि महिला और पुरुष दोनों रजिस्ट्रार के सामने निकाहनामा पर दस्तख़त कर देते हैं और बस वे कानून की नजर में पति–पत्नी हो जाते हैं। कानूनन निकाह के मुंअकिद होने के लिए जुबानी ईजाब व कुबूल और गवाहों की मौजूदगी जरूरी नहीं समझी जाती। शरीअत के अनुसार निकाह इस तरह मुंअकिद नहीं होता। जब दोनों पक्ष बोलने की शक्ति रखते हों तो जरूरी है कि बोलकर ईजाब व कुबूल हो और दो मुसलमान पुरुष या एक पुरुष और दो महिलाएं गवाह के रूप में मौजूद हों अगर मैरिज रजिस्ट्रार के पास ये दोनों शर्तें पूरी हो जाती हैं, तब तो निकाह सही हुआ और इन दोनों के दाम्पत्य संबंध हलाल होंगे नहीं तो निकाह फासिद होगा और संबंध हराम होंगे। अगर किसी ने अदालती निकाह कर लिया है तो उसे चाहिए कि वह दाम्पत्य संबंध स्थापित करने से पहले दुबारा गवाहों की मौजूदगी में ईजाब व कुबूल करके निकाह को दुरुस्त कर ले।

रजिस्ट्रार के जरिये निकाह का यह तरीका इस्लाम की आत्मा के खिलाफ है। इस्लाम चाहता है कि निकाह एलानिया हो। इसका अधिक से अधिक प्रचार हो और लोग दोनों के बीच हलाल और जायज तरीके पर आधारित दाम्पत्य संबंध से परिचित हो जाएं।

शेष पृष्ठ 18

किस्त चार

मुस्लिम समाज

समाज सुधार

दीनी मदारिस - महत्व, उपयोगिता और ज़रूरत

- हज़रत मौलाना सैय्यद राबे हसनी नदवी

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में सुधार की जरूरत

दुनिया के पूर्वी इलाकों में जहाँ खास तौर पर मुसलमानों की बड़ी आबादियाँ और हुकूमतें रही हैं पिछली दो तीन सदियों के पश्चिम की साम्राज्यवादी सत्ता ने मुसलमानों को राजनीतिक और आर्थिक मैदानों में जो नुकसान पहुँचाया उसकी कटुता और उस से जो नुकसान उन के राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र में हुआ वह किसी से छिपा नहीं है। लेकिन इस ग़ल्बः और इक्तदार (सत्ता) के जरिये मुसलमानों के मजहबी अकीदा (आस्था) और उन की सही सोच को पश्चिम के साम्राज्यवादी वर्चस्व (ग़ल्बः) ने जो नुकसान पहुँचाया वह अन्य नुकसान से कम नहीं है। मुसलमानों की शिक्षा व्यवस्था जो कि धार्मिक तथा साँस्कृतिक मूल्यों को मजबूत करता था, पाश्चात् सत्ता ने उस के मुकाबले में अपने हितों और पश्चिमी मूल्यों पर आधारित शैक्षिक व्यवस्था के द्वारा अपना वर्चस्व जमाने का भरपूर प्रयास किया। और अपनी पश्चिमी शिक्षा व्यवस्था से ऐसे व्यक्ति तैयार करने शुरू किये जो मुसलमानों के मिल्ली रूझान (सामुदायिक झुकाव, पसन्द–नापसन्द) और मजहबी तालीमात के विपरीत पश्चिमी रूझानात और परिकल्पनाओं के पक्षधर बल्कि वकील हों, पश्चिम के यह रूझान और जीवन–परिकल्पनायें आखिरत का अकीदा और परिकल्पना की एकदम अनदेखी कर देने और जीवन का सारा नफ़ा–नुकसान सिर्फ इसी दुनिया की जिन्दगी में सीमित रखने का हामिल बनते हैं। हालांकि हमारी इस्लामी जीवन परिकल्पना सिर्फ इस दुनिया के नफा नुकसान पर निर्भर नहीं, वह आखिरत की आस्था और जिन्दगी के आमाल में आखिरत के सकुशल होने की कामना का भी हामिल है और दुनिया में किये जाने वाले आमाल का लेखा जोखा किये जाने और इस के लिये जरूरी फिक्रमन्दी और एहतियात बरतने की जरूरत का हामिल है। इस प्रकार दोनों परिकल्पना अर्थात् जीवन की पश्चिमी कल्पना विपरीत हो जाती हैं। जीवन की यह दोनों परिकल्पना एक दूसरे से विपरीत एक जगह जमा नहीं हो सकतीं। पश्चिमी परिकल्पना सिर्फ साँसारिक नफ़ा–नुकसान पर टिकी है जो कि सिर्फ एक तरफा है। लेकिन इस्लाम जो परिकल्पना देता है वह दुनिया और आखिरत दोनों को जमा करने की परिकल्पना (कंसोट) है, इस में आखिरत की चिन्ता को अधिक महत्व प्राप्त है, क्योंकि आखिरत (परलोक) का जीवन अत्यधिक लम्बा बल्कि न ख़त्म होने वाला है। इसके मुकाबलें में साँसारिक जीवन कम मुद्दत का है। इस्लाम ने इस की दुरूस्तगी और इसके फायदे के लिये भी फिक्र के साथ साथ दुनिया की फिक्र को भी आवश्यकतानुसार और फितरत (नेचर) के जायज तरीकों के तहत जरूरी करार दिया है।

पश्चिमी साम्राज्य के अकलमन्दों ने जो शिक्षा–व्यवस्था हर जगह लागू की है वह उस के एक तरफा सिर्फ दुनियावी परिकल्पना का हामिल है। यह पाठयक्रम जारी हुआ तो इसने एक सदी की मुद्दत में मुसलमानों की नई नस्ल को बहुत प्रभावित किया, और उनकी सोच को काफी हद तक अपनी सोच में ढाला, और चूंकि अवाम अपने सतही जेहन के सबब दुनियावी कामयाबी को सिर्फ हुकूमत के सरपरस्ती वाले निजाम ही में निर्भर समझती है इस लिये देश की जनता और ऐसे बुद्धिजीवी जिन के मन में परलोक की कल्पना मजबूत नहीं है, सिर्फ उसी की तरफ आकर्षित हुए और इस में दीनी लेहाज से कुछ नकारात्मक असर होते हैं, इस से मुसलमानों की मजहबी तालीम को जो नुकसान पहुँचता है उस को ध्यान में नहीं लाते।

प्रचलित शिक्षा व्यवस्था का यही वह पहलू है जिस को ध्यान में रखते हुए इस्लामी गैरत के हामिल मुसलमानों ने मजहबी तालीमात के लिये एक खतरा महसूस किया, और इसी के रोक–थाम के लिये एक अलग और इस्लाम के दीनी तकाजः के लेहाज से अपनी विशिष्ट शिक्षा व्यवस्था जारी की और इसके जरिये दीनी खतरा के रोक थाम की कोशिश की, और अपने विशेष मदरसे कायम किये जिन में इस्लामी शिक्षा के बुनियादी विषय प्रभावी और विस्तृत अन्दाज में रखे। ताकि इन के जरिये ऐसे व्यक्ति तैयार हों सकें जो पश्चिम के भौतिकवादी और साम्राज्यवादी सोच के प्रभावों का मुक़ाबला करने की क्षमता हासिल कर सकें, और उम्मते इस्लामिया की धार्मिक पहचान और जीवन की स्वच्छ व अच्छी परिकल्पना को जिस हद तक हो सके बचाने का काम कर सकें। और इस से ऐसे उलमा तैयार हों जो हालात और जमाने के बदलते हुए अन्दाज को सामने रखते हुए मुसलमानों की धार्मिक विशेषता के अस्तित्व के लिये जरूरी और मुनासिब हद तक प्रयास करें ताकि आम मुसलमान इस्लाम की शिक्षा से वंचित न हो, बल्कि उनको ऐसी रहनुमाई मिले जिस से वह जीवन को इस्लामी मूल्यों के अनुसार मजबूत कर सकें। अतएवं मुल्क के धर्म गुरूओं ने ऐसे दीनी मदरसे कायम किये जो भौतिक संसाधनों की भारी कमी के बावजूद मुसलमानों को उन के दीनी तकाजे से वाकिफ़ कराते रहे और दीनी उलूम और उस की जरूरत के अनुसार इन मदरसों को चलाते रहे। मुसलमानों का मजहब से जो तअल्लुक है, उस की बिना पर अवाम की तरफ से उलमा की कोशिशों को आम तौर से सराहा गया और पसन्द किया गया। और इन के विपरीत पश्चिमी व्यवस्था में पले बढ़े लोगों ने उलमा से और उन की शिक्षा व्यवस्था से असहमति जताई और इस को गैर जरूरी काम करार दिया।

बहर हाल एक तरफ पश्चिमी शिक्षा व्यवस्था ने दीन से उदासीनता और जीवन की आजादी की सोच बनाई, दूसरी तरफ इस के मुकाबले में उलमा–ए–दीन से जो हो सका उन्हों ने अपने दीनी मदरसों के जरिये अंजाम दिया जिस को पश्चिमी शिक्षा व्यवस्था में पले बढ़े लोग घिसी पिटी शिक्षा–व्यवस्था होने का ताना देते रहे और जीवन की दुंनियावी तरक्की और बेहतरी के उनवान से अपनी पश्चिमी शिक्षा की बरतरी साबित करते रहे।

इस क्रम में यह बात समझने की है कि पश्चिमी सोच को लेकर चलने वाली शिक्षा–व्यवस्था ने दीनी तालीम व मूल्यों के लिये जो खतरा पैदा किया उस के मुकाबले के लिये मजहबी उलूम में पुख्तगी और व्यापकता रखने वालों की एक तादाद का होना जरूरी था, जो मुसलमानों के अक़ीदा व मजहब और उस पर आने वाले ख़तरे का मुकाबला कर सकें। इस काम के लिये इसी के अनुसार उलूम में महारत के लिये उन को भी एकाग्रचित होकर हासिल करना जरूरी था। इस लिये इस के हासिल करने वालों को इस के साथ भी अपने को लगा देना पड़ा। इस्लामी तालीम को जीवित रखने के लिये हमारे यह दीनी मदरसे एक जरूरी तादाद में स्थापित किये जाने अनिवार्य थे। अलबत्ता सामूहिक जीवन के जायज तकाजों के तअल्लुक से जो अन्य विषय हैं जिन में ज़िन्दगी की दुनियावी जरूरतें जैसे इतिहास, भूगोल, गणित और भाषा और जीवन–व्यवस्था के मामले आते हैं, इन की हमारे दीनी मदरसों ने अनदेखी नहीं की, बल्कि इन से भी आवश्यकतानुसार वाकफियत पैदा करने के लिये मजहबी उलूम की तालीम के साथ अतिरिक्त विषय के तौर पर पाठयक्रम में दाखिल किया। लेकिन यह बात भी समझने की है कि हमारे दीनी मदरसों का जो दीनी पाठयक्रम है, वह इतनी मात्रा में है कि इस के साथ हर तरह के उलूम ज्यादा मात्रा में शामिल नहीं किये जा सकते। लेकिन इन में से जो वास्तव में जरूरी हैं उन का चयन उन की जरूरी मात्रा में दाखिल करने की फिक्र की गई। इलबत्ता इन का चयन हमारे इन उलमा ही के करने का है जो अपने विस्तृत दीनी उलूम के साथ समय और जीवन की अनिवार्य जरूरत के उलूम की जानकारी रखते हैं।

इस सिलसिले में नदवा की अंजुमन ने जो आज से 125 साल

पहले कायम की गई थी, उपाय किये। उस की तरफ से पहले इस बात की अपील की गई कि दीनी उलूम की मात्रा व पाठयक्रम कम किये बिना समय और जीवन की जरूरत से तअल्लुक रखने वाले विषयों को भी पाठयक्रम में जगह दी जाये। फिर दारूलउलूम कायम कर के इसका प्रयोग शुरू किया था, जिस को शुरू में हमारे मजहबी तालीम के अन्य मदरसे एख्तियार करने में कठिनाई महसूस करते हुए अमल में नहीं लाये। इस की वजह से बड़ी हद तक देश में कायम शिक्षा–व्यवस्था दो अलग–अलग विभागों में बंट कर चलती रही। एक खालिस दीनी दूसरी खालिस (विशुद्ध) दुनियावी। इस की वजह से उम्मत के शिक्षित व्यक्ति दो अलग–अलग रास्तों में चलते रहे, और एक दूसरे से दुराव रखते रहे। लेकिन अब कुछ अर्सः से अक्सर दीनी मदरसे तालीम के दोनों पहलुओं को जमा करने की कोशिश करने लगे हैं, और यह मानने लगे हैं कि विभिन्न दिशाओं में सोचने वाले तब्कों के बीच सहयोग और निकटता की जरूरत है, और यह जरूरत हमारे दीनी मदरसों के जरिये पूरी हो सकती है। इस के लिये हमारे इन मदरसों और स्कूल कालेजों दोनों को अपने सोचने का ढंग बदलना होगा। मात्र दीनी मदरसों में ऐब निकालना और उन को चेंज की सलाह देना और अपनी व्यवस्था की कमजोरियों को नजर अन्दाज करना सही नहीं करार दिया जा सकता। मुसलमानों की आधुनिक (अस्री) संस्थाओं को भी इस्लामी शिक्षा से जुड़े रखने के लिये दीन के जरूरी विषयों को अपनी शिक्षा–व्यवस्था में शामिल करना होगा, ताकि इन संस्थाओं से पढ़कर निकलने वाले भी इस्लाम के अक़ीदे व ख़्याल से जुड़े रहें, और पश्चिमी सोच में गुम होकर न रह जायें। इसी के साथ यह जरूरत भी है कि हमारे दीनी मदरसे अपने पाठयक्रम में समाजी और बशरी जरूरतों से वाकिफ कराने वाले विषय भी शामिल करें और यह कि अपने साधनों की सीमा तक शिक्षा–व्यवस्था के आधुनिक प्रयोगों से हासिल तरीकों से भी फायदा उठायें।

लेकिन यह इस तरह हो कि हमारे दीनी मदरसों में पढ़ाये जाने वाले मजहबी उलूम में विस्तार व पुख्तगी में कमी न आये, ताकि दीनी और अखलाकी जरूरतों के लिये उम्मत को बराबर अच्छे रहबर (गाइड) मिलते रहें। बहर हाल पाठयक्रम में बदलाव की दावत के तअल्लुक से दोनों बातों की ओर ध्यान देने का जरूरत है। बल्कि यह कहना शायद गलत न होगा कि हमारे दीनी मदरसों को अपने पाठयक्रम में नये विषयों को दाखिल करने की दावत इतनी जरूरी नहीं जितनी कि आधुनिक शिक्षा–व्यवस्था में इस्लामी–शिक्षा को दाखिल करने की जरूरत है।

मनुष्य की मानसिक और व्यवहारिक क्षमताओं के विकास में शिक्षण प्रक्रिया महत्वपूर्ण नतीजा पैदा करती है। और शिक्षण प्रक्रिया के लिये पाठयक्रम और व्यवस्था की आवश्यक्तानुसार संरचना करना बुनियादी हैसियत रखती है, और यह कौम व मिल्लत, जीवन का उद्देश्य और भावी जरूरतों को सामने रख कर तैयार किया जाता है। अतएवं इस को मिल्लत की जरूरतों और उस की धार्मिक व सॉस्कृतिक मूल्यों के अनुरूप होना चाहिये ताकि उस के साँचे में जो लोग ढ़ाले जायें वह कौम की जरूरतों और तमन्नाओं के अनुरूप हों। मजहब और मिल्लत की बुनियादी जरूरत के साथ--साथ व्यवस्था व पाठयक्रम लचीला होता है, इस में बदलते हालात का भी लेहाज रखा जाता है और दूसरों के अनुभव से फायदा उठाया जाता है, लेकिन यह सब कुछ मिल्लत की पहचान को बनाये रख कर किया जाता है।

पश्चिम के पूरब पर छा जाने से हमारे पूरब को इस दायरे में खासा नुकसान पहुँचाया है, और यह नुकसान जारी है। यह तब तक दूर नहीं हो सकता जब तक हम अपनी धरोहर की शिक्षा व्यवस्था में अनदेखी करते रहेंगे। पश्चिमी शिक्षा–व्यवस्था में भाषा और सामाजिक विषय और अंग्रेजी भाषा का पाठयक्रम बनाने वालों और उस के अनुरूप शिक्षा देने वालों की जैसी सोच होती है, उन की संस्थाओं में शिक्षा पाने वालों पर वैसा ही असर पड़ता है।

शेष पृष्ठ 10

रोजे के नये मसाइल

- इदारा

रोजे में इंन्जेक्शन, ग्लूकोज और खून चढ़ाने का हुक्म

इन्जेक्शन के ज़रिये (द्वारा) जो चीजें जिस्म में दाखिल की जाती हैं वह आम तौर से रगों के वास्ते से कल्ब व दिमाग या मिअ़दा (हृदय, मस्तिष्क तथा आमाशय) और ऐसी जगहों से गुजरती हैं जो उन की वास्तविक राह और फुकहा की जबान में "मनफ़ज़" सूराख नहीं है। फिक्ह की किताबों में मौजूद मुखतलिफ मिसालों को सामने रखने से अन्दाजा होता है कि फुकहा इन सूरतों को रोजा तोड़ने वाला नहीं बताते (उन मिसालों को यहाँ नहीं लिखा जा रहा है) अतः इन्जेक्शन द्वारा चाहे खून पहुँचाएं या दवा, रोजा न टूटेगा। ग्लूकोज भी नसों द्वारा चढ़ाया जाता है सीधे किसी सूराख से मिअदा या दिमाग में नहीं पहुँचाया जाता। इस लिये रोजा न टूटेगा।

जिस्म के अन्दर दवा का इस्तिअमाल

औरत की शर्मगाह में किसी भी तरह की दवा डालने टपकाने से रोजा टूट जाएगा अलबत्ता औरत अपनी शर्मगाह में या पाखाने के मकाम में उंगली डाल या मर्द अपने पाखाने के मकाम में उंगली डाले तो रोजा न टूटेगा लेकिन अगर उंगली पानी या तेल या दवा से तर होगी तो रोजा टूट जाएगा।

आँखों और कानों में दवा डालना

फुकहा ने लिखा है आँखों में चाहे तर दवा डाली जाए चाहे खुश्क और चाहे उस का मजा हलक में महसूस हो रोजा नहीं टूटता। देखें फतावा आलम गीरी 1:203 और खुलासतुल फतावा 1:253 हदीस में भी रोजे की हालत में सुर्मा लगाने का सुबूत मौजूद है। देखें तिर्मिजी 3:105 (बाब माजाअ फिलकुहल)।

मिअदे में नलकी डालना

आज कल कुछ रोगों की जानकारी के लिये मिअदे (आमाशय) में नल्की डालते हैं कभी वह वहाँ से कुछ माँस (गोश्त) भी जाँच के लिये कतर कर लाती है इस से रोजा नहीं टूटता।

नाक में दवा डालना

नाक में दवा डालने से रोजा टूट जाएगा।

रोजे की हालत में बफारा लेना

बफारा लेने से रोजा टूट जाएगा।

रोजे की हालत में आक्सीजन लेना

अगर सिर्फ आक्सीजन चढ़ाई जाए तो रोजा न टूटेगा लेकिन अगर आक्सीजन में कोई दवा मिली होगी तो रोजा टूट जाएगा।

टूथ पाउडर, पेस्ट और मिस्वाक

रोजे की हालत में मिस्वाक को इस्तिअमाल दुरुस्त है चाहे वह खुश्क हो या तर रोजा मक्रूह भी न होगा अलबत्ता अगर उस की तरी या उस का कुछ हिस्सा निगल लिया तो रोजा टूट जाएगा। टूथ पेस्ट या टूथ पाउडर या मंजन या गुल से रोजा मक्रूह होगा बचना चाहिये अगर इन का कोई हिस्सा हलक से नीचे उतर गया तो रोजा टूट जाएगा।

पान तम्बाकू

पान तम्बाकू खाने, हुक्का, बीडी, सिगरेट वगैरह पीने से रोजा टूट जाएगा। कुछ उलमा की राय है कि जान बूझ कर इन के इस्तिअमाल से कफ्फारा भी वाजिब होगा।

रोजा तोड़ने की इजाजत

जब रोजे के सबब रोजेदार के हलाक होने का डर पैदा हो जाए या मरीज का मरज बढ जाने का खतरह पैदा हो जाए तो रोजा तोड़ देने की इजाजत है।

(जदीद फ़िक्ही मसाइल जिल्द 1 सफहात 179–192 संक्षेप के साथ।)

❑❑

किस्त 26

हम कैसे पढ़ायें?

– डॉ० सलामतुल्लाह

5. खोज की विधि

इस शिक्षण विधि के आविष्कारक प्रोफेसर आर्म स्ट्राँग के अनुसार, "यह वह विधि है जिस में बच्चा एक खोजकर्ता की हैसियत से अपनी स्वयं की खोज व विवेचना के जरिये किसी बात की खोज लगाता है। इस विधि को अपनाने के लिये टीचर को चाहिये कि वह बच्चे के लिये वह हालात पैदा कर दे जिन में कि किसी चीज़ के आविष्कारक ने काम किया था।

प्रोफेसर आर्म स्ट्राँग का विचार है कि यदि हम बच्चों के माहौल की संरचना इस तरह कर सकें कि वह चीजों के खोज निकालने की जरूरत महसूस करने लगें जो हम उन से निकलवाना चाहते हैं तो वह अपनी तबीयत पर जोर डालकर स्वतः चीजें निकाल लेंगे और उन में ईजाद और खोज की वह बात पैदा हो जायेगी जिस के कारण शैक्षिक विकास के आश्चर्यजनक कारनामें सामने आये हैं।

जब कोई व्यक्ति किसी समस्या की सच्चाई को स्वयं से जानता है तो इस जानने में और नई समस्यायें पैदा होती हैं। इस प्रकार खोज का सिलसिला आगे बढ़ता चला जाता है।

अध्यापक बन्धुओं के लिए एक मिसाल

इस विधि को हम एक मिसाल से स्पष्ट करेंगे। एक दिन एक लड़के ने अपने कमरे की दीवार पर कुछ रंग देखे। वह बहुत हैरान था। क्यों कि इस से पहले उसने कभी अपने कमरे में इस किस्म की चीज नहीं देखी थी। उसे उस का कारण मालूम करने की इच्छा हुई। पहले तो उसने सोचा कि शायद उसके न रहने पर किसी ने दीवार पर वह चित्र बना दिये हैं, अतएवं वह एक ऊँचे स्टूल पर खड़ा हो गया और हाथ से रंग मिटाने की कोशिश करने लगा। लेकिन उसे मालूम हुआ कि दीवार पर रंग नहीं थे, क्यों कि मिटाते समय वही रंग उस के हाथ पर उसी रूप में दिखाई देने लगे। इस से वह इस नतीजे पर पहुँचा कि वह रंग साधारण नहीं हैं जैसे कि दीवारों पर किये जाते हैं अब उसे और भी ज्यादा हैरत हुई और यह ख्याल हुआ कि कमरे में कोई चीज ऐसी तो नहीं है जो इस अजीब घटना का कारण हो। अतः उसने ध्यान से कमरे की तमाम चीजों को देखना शुरू किया। मेज पर शीशे की एक तिकोनी बोतल रखी थी। उसे शक हुआ कि शायद इस घटना का सम्बन्ध इस बोतल से हो, अतएंव उसने उस बोतल को वहाँ से उठा

अनुवादः एम0 हसन अंसारी

लिया। देखता क्या है कि वह सब रंग एक दम दीवार से गायब हो गये उसने उस बोतल को दूसरी मेज पर रखा और देखा कि दूसरे दीवार पर वैसे ही रंग दिखने लगे। अब तो उसे भी यकीन हो गया कि इस घटना का असल कारण बोतल ही है, लेकिन उस ने सोचा कि आखिर इस बार दूसरी दीवार पर रंग क्यों दिखाई दिये? इस से नतीजा निकला कि न सिर्फ बोतल बल्कि और भी कोई चीज इस घटना की जिम्मेदार है। बहुत से प्रयोगों और निरीक्षण के पश्चात आखिरकार वह इस नतीजे पर पहुँचा कि सूरज की रौशनी की दिशा और बोतल दोनों पर इस घटना का दारोमदार है। इस तरह उसने साइंस के एक बड़े सिद्धान्त की खोज अपने व्यक्तिगत प्रयास से कर लिया। इसके बाद उसने स्कूल में अपने टीचर को पूरी घटना बताई। और सूरज की रौशनी से बोतल के जरिये रंग पैदा होने का कारण खोज निकाला। फिर टीचर ने प्रयोग करा के यह बात निकलवाई कि सूरज की रौशनी में सात रंग होते हैं जो किसी पारदर्शक वस्तु से गुजरने के बाद जाहिर हो जाते हैं।

विशेषतायें

उपरोक्त मिसाल इस विधि को रोचक ढंग से सुस्पष्ट करती है।

अगर हम बच्चों को वह शैक्षिक समस्यायें जो उन के सामने आती हैं, इस तरह सोचने का मौका दें तो यह अभ्यास बड़ी–बड़ी चीजें मालूम करने में उनका मार्गदर्शन कर सकते हैं। इस तरह जो कुछ भी सिखाया जायेगा उस पर बच्चे को पूरा काबू होगा और जब जरूरत होगी उसे इस्तेमाल कर सकेगा। विभिन्न चीजों को सही ढंग से क्रमबद्ध करने की आदत पड़ेगी। इस से बच्चे को अपनी शक्ति का एहसास होगा और उसका आतमविश्वास बढ़ेगा।

इस विधि पर कुछ आपत्तियाँ बजा तौर पर की जा सकती हैं। सब बच्चे होने वाले न्यूटन या फेराडे नहीं होते कि वह खोजकर्ता की हैसियत से काम कर सकें। दूसरे यह कि इस विधि को काम में लाने के लिये बहुत समय चाहिये जो एक साधारण स्कूल में नहीं किया जा सकता। तीसरे यह कि असल खोजकर्ता के कारनामें की पृष्ठभूमि आज कल के विद्यार्थी के माहौल से बिल्कुल अलग थी। और कोई खोज किसी एक व्यक्ति के प्रयासों का नतीजा नहीं है इस में बहुत से लोगों की कोशिश शामिल है।

इस्तेमाल की शर्तें

निस्सन्देह होशियार टीचर इस विधि को समुचित संशोधन के बाद सफलतापूर्वक इस्तेमाल कर सकता है। उसे जानना चाहिये कि किसी समस्या के बारे में बच्चों को क्या क्या बाते बताई जायें, कहाँ तक उनका मार्गदर्शन किया जाये और कितना हिस्सा उन के लिये छोड़ दिया जाये कि बच्चे स्वयं उसे सोच कर निकालें। जाहिर है यह विधि ऐसी कक्षाओं में जिस में छात्र संख्या अधिक हो, प्रयोग नहीं की जा सकती। क्योंकि इसमें टीचर के मार्गदर्शन की बड़ी जरूरत है।

यह विधि विज्ञान–शिक्षण में विशेषकर बड़ी कक्षाओं में आसानी से प्रयोग की जा सकती है। गणित, इतिहास, ग्रामर के शिक्षण में कभी–कभी यह विधि अपनायी जा सकती है। इतिहास के शिक्षण में इसे स्रोत की विधि कहते हैं।

निष्कर्ष

शिक्षण के हर विधि में कुछ गुण हैं और कुछ अवगुण भी। टीचर को चाहिये कि वह किसी एक विधि में बंध कर न रह जायें।

(जारी.....)

❑❑

भारत का संक्षिप्त इतिहास

अतएवं ईद के चाँद की खबर गुजरात से दिल्ली इसी डाक से भेजी जाती थी।

मुगल काल की खास यादगार बात यह है कि हिन्दू मुसलमान मिलकर एक हो गये। उन की भाषा एक हो गई। सभ्यता और संस्कार एक जैसे हो गये। रहने सहने, पहनने ओढ़ने का ढंग एक जैसा हो गया और रस्म व रिवाज (परम्पराएं) यकसाँ हो गये।

(जारी.....)

❑❑

आपके प्रश्नों के उत्तर

जाहिर है कि अदालती निकाह में अगर जुबानी ईजाब व कुबूल हो जाए और दो गवाह भी मौजूद हों तब भी उसका उद्देश्य पूरी तरह पूरा नहीं होगा।

तहरीर के जरिये भी निकाह हो सकता है, मगर यह जरूरी है कि दोनों पक्षों में से एक की ओर से निकाह के कुबूल करने का जुबानी प्रदर्शन हो और केवल एक ही की ओर से तहरीर हो। साथ ही कुबूल करने का प्रदर्शन गवाहों के सामने किया जाए और वह तहरीरें भी उन गवाहों को सुना दी जाए। मिसाल के तौर पर जैद शहनाज को लिखे कि मैंने तुम से इतने महर पर निकाह किया। शहनाज के पास जब यह तहरीर पहुँचे तो सबसे पहले वह दो गवाहों को बुलाकर उनको यह तहरीर सुना दे और फिर कहे कि मैं इसे कुबूल करती हूँ। अब निकाह मुंअकिद हो जाएगा।

अगर शहनाज तहरीर पढ़कर गवाहों को नहीं सुनाए बल्कि सिर्फ अपने कुबूल करने का प्रदर्शन उनके सामने करे या जुबानी प्रदर्शन के बजाय सिर्फ तहरीर लिख दे और उसी पर गवाहों को दस्तखत करा ले या गवाहों के दस्तख़त भी नहीं कराए इन सभी स्थितियों में निकाह नहीं होगा।

(जदीद फिक्ही मसाइल, भाग–1 से)

❑❑

फिक्र व अमल में संतुलन की आवश्यकता

- मौलाना सैय्यद मुहम्मद वाज़ेह रशीद नदवी

अनुवाद : नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

इस्लाम एक पुर्ण जीवन व्यवस्था और आकाशीय व सर्वकालिक जीवन विधि है। जिसमें मानव जीवन के व्यक्तिगत व सामूहिक, साँस्कृतिक और आत्मिक व भौतिक समस्त कोण एक दूसरे से परस्पर जुड़े हुए हैं, जिन्हें एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। इस्लाम का ये सर्वकालिक कानून और सुदृढ़ जीवन व्यवस्था उसी सूरत में अपनी उपयोगिता के अच्छे प्रभाव छोड़ सकता है जब उसके रचना तत्व (अज्जाए तरकीबी) में उचित सम्पर्क व सम्बन्ध बनाया जाए और उसकी शिक्षा को उसके मूल उद्देश्य के साथ अमल में लाया जाए। उसका उदाहरण एक इमारत की है कि जिस तरह इमारत केवल ईंट–गारे और बिल्डिंग मैटिरियल का नाम नहीं और जिस तरह केवल ईंट और बिल्डिंग मैटेरियल इन्सान की आवश्यक्ताओं की पुर्ति नहीं कर सकता जब तक कि उसको एक दूसरे से जोड़ न दिया जाए। ठीक उसी तरह इस्लाम के सुदृढ़ व संतुलित जीवन विद्यान को यदि पुर्ण रूप से जिन्दगियों में लागू न किया जाए तो वह अपना किरदार कैसे अदा कर सकता है। इसी लिए हदीस शरीफ में मुसलमान की तश्बीह (उपमा) एक मुकम्मल इमारत और एक ढाँचे से दी गई है।

इस्लामी जीवन व्यवस्था के पाँच रचनात्मक तत्व हैं :

(1) तौहीद (2) नमाज (3) रोजा (4) जकात (5) हज, उसका अस्तित्व व कम्र तभी सम्भव है जब उन पाँचों स्तम्भ के मध्य सुन्दर सामंजस्य और सम्पर्क व सम्बन्ध पाया जाए।

आज मुसलमानों की समस्या ये नहीं है कि उनके जीवन में इस्लाम मौजूद नहीं, या इस्लामी शिक्षा के दृश्य दिखाई नहीं देते, या इस्लामी आदेशों को अमल में लाने की कोशिश नहीं हो रही है बल्कि वास्तविक्ता ये है कि उनके जीवन में इस्लाम भी है, इस्लामी शिक्षा से अच्छी तरह परिचय भी है, उनके अमल में लाने की कोशिशें भी जारी हैं लेकिन उनमें सम्बन्ध सम्पर्क और कम्र नहीं है। आज अच्छे विचार के वाहक और आवाहक भी मौजूद हैं, उपासना (इबादत) और नैतिक शिक्षा को अपनाने की भावना भी है, अल्लाह की ओर बुलाने का अमल भी जारी है, व्यक्ति और समूह के अन्दर कुर्बानी व जांनिसारी और अल्लाह के रास्ते में जान की बाजी लगा देने का जज्बा भी है, यहाँ तक कि जीवन के हर क्षेत्र में इस्लाम और इस्लामी शिक्षा मौजूद है लेकिन ये सब कोशिशें किसी एक पहलू पर आधारित हैं, जिसके कारण दूसरे पहलू जो अधिक आवश्यक और ध्यान देने योग्य हैं, उनपर ध्यान कम दिया जा रहा है। हर व्यक्ति अपने काम में ऐसा व्यस्त है कि उसे दूसरे पहलुओं पर ध्यान देने का समय ही नहीं मिलता। उदारणतः यदि किसी का सम्बन्ध शिक्षण–प्रशिक्षण से है तो उसे पडोस में फूट पड़ने वाले झगड़े से कोई मतलब नहीं। यदि कोई इस्लाम के प्रचार–प्रसार में लीन है तो उसे मुसलमानों में आम जेहालत और अशिक्षा से कोई सरोकार नहीं, और यदि समाज सेवा में व्यस्त या रीलिफ कमेटियों का सदस्य है या समाज सुधार हेतु कार्य कर रहा है तो उसका ध्यान आत्म सुधार (इस्लाहे नफ्स) और व्यवहार को ठीक करने की ओर नहीं है। यही कारण है कि मुसलमानों की अनगिनत समस्याएं और व्यक्तिगत व सामूहिक मामलों की ओर नजर नहीं जा रही है, इस लिये कि उन पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

इसका ये आशय कदापि नहीं है कि ये समस्त प्रयास गैर मुफीद व बेअसर हैं। निःसन्देह ये समस्त प्रयास बड़े पवित्र और उत्साहवर्धन के पात्र हैं। उनके प्रभाव भी इन्शा–अल्लाह पड़ेगें। लेकिन उम्मते इस्लाम की तरक्की और बुलन्दी उसी समय सम्भव है जब इन विभिन्न शैलियों में कार्य करने वालों में परस्पर सम्पर्क और एक दूसरे की कद्र हो और इस्लाम के तमाम पहलुओं को मुकम्मल शक्ल में पेश किया जाए तथा मुस्लिम समाज का हर व्यक्ति इस्लाम के समस्त क्षेत्रों के विकास में शरीक हो, ताकि इस्लाम की सहीह तस्वीर सामने आए। आचार–व्यवहार, इबादत व बन्दगी, समाज सेवा एवं अल्लाह से सम्पर्क व सम्बन्ध और प्रचार–प्रसार, समस्त विभागों में आवश्यक्तानुसार इकाई व सम्पर्क हो, और सभी लाइफ डिपॉर्टमेन्ट में विकास का क्रम जारी हो और हरेक मुसलमान इस्लाम का आवाहक, इस्लाम का रक्षक, जमाने के खतरों से अपडेट, जमाने की गर्दिशों का नब्जशनास, भविष्य के अन्देशों से अवगत व चौकन्ना और अपनी मंजिल व मिशन से परीचित हो, उसमें इस्लामी जिन्दगी के विधि–विधान से गहरी वाकफियत और मुश्किलों का सहीह हल पेश कर देने की योग्यता हो।

मूल और आधारित समस्या मुसलमानों के जीवन में इस्लामी शिक्षा के व्यावहारिक प्रचलन का है। उनमें उनकी चेतना और जागरूकता का है और जीवन के प्रत्येक पहलू पर उचित ध्यान देने का है, क्योंकि ये हकीकत है कि कोई आवाहन और आन्दोलन केवल अपनी आस्थाओं, विचारों और विशेष आदर्शों के आधार पर दिलों को नहीं जीत सकता है। हृदय को प्रभावित करने के लिए जो कुछ वह कह रहा है, उसका अमली नमूना हो, उसकी कथनी व करनी में अन्तर न हो। ताकि उसको देखकर दावत हकीकत बन कर सामने आ जाए और वह अपने इस्लाम धर्म की शिक्षा की रौशनी में अपनी समस्याओं का समाधान कर सके। इसलिए कि यदि एक आन्दोलन व आवाहन एक व्यक्ति की समस्याओं का निदान कर सकने में सक्षम न हो तो कैसे माना जा सकता है कि वह समाज की समस्याओं का निदान करने की क्षमता रखता है। यही कारण है कि इस्लाम ने व्यक्ति के सुधार की ओर बहुत ध्यान दिया है। इस्लामी आवाहन और इस्लामी प्रचारकों के जीवन चरित्र के अध्ययन से ज्ञात होता है कि उन्होंने अपने निमंत्रण का प्रथम सम्बोधित स्वयं को बनाया है। उसकी देख भाल और सुधार की ओर ध्यान दिया तो उनके आन्दोलन व आवाहन ने विकास के रास्ते तय किये। जब उन्होंने स्वयं अपने आप पर इस्लामी शिक्षाओं को लागू किया तो उनकी कथनी और करनी में प्रभाव और दूसरों को प्रभावित करने की योग्यता पैदा हो गई। उसके बाद उन्होंने अपने अमल के दायरे में दूसरों को शरीक किया। इस तरीके से एक आदर्श इस्लामी समाज की स्थापना हुई। जो हर कोण से इस्लामी साँचे में ढला हुआ और बहुआयामी इस्लामी संस्कृति का आइनादार था, जिसका हर रंग हरेक रंग से जुदा और जिसकी जीवन व्यवस्था दूसरो से बहुत ऊँचे स्तर की थी,

लेकिन अफसोस! आज मुसलमानों की कथनी व करनी में टकराव दिखाई देता है। मुसलमान की कार्यप्रणाली उसके इस्लाम का इन्कार कर रही है। यद्यपि इस्लामी शिक्षाओं में सम्पर्क और जोड़ पाया जाता है। अतः इस्लामी शिक्षा को आम करने के लिए कार्य करने वालों का दायित्व है कि उनकी कथनी व करनी में अन्तर न हो। दोनो में जोड़ और सामंजस्य हो। और वह लोगों के लिये अमली नमूना हों, और फिक्री व अमली तौर पर इस्लामी जीवन व्यवस्था की भरपूर प्रतिनिधित्व करें।

भूतकाल में यद्यपि इस प्रकार मीडिया का विकास व सामग्री की उपलब्धता न थी। उसके बावजूद इस्लाम ने जबरदस्त कामयाबी हासिल की और उसकी शिक्षाओं ने दिलों को जीत लिया। इसलिए कि इस्लामी व दावती अमल की बुन्याद आवाहक (दाओ) की जिन्दगी पर थी। जो इस्लामी शिक्षा और इस्लामी संस्कृति का आइनादार था तथा जिसमें इस्लाम अपनी समस्त शिक्षाओं के साथ विराजमान दिखाई देता है। भूतकाल के आवाहक यद्यपि व्यापारी थे और दिखने में दुनियादार थे। लेकिन चुंकि उनका चरित्र इस्लाम का दर्पण

था, इसलिए उन्होंने आवाहन के मैदान में शानदार कामयाबी हासिल की और उनके आवाहन के आश्चर्यजनक व विश्वव्यापी प्रभाव पड़े। व्यक्तिगत और सामूहिक सुधार हर कोण से हो रहा था, इसलिए कि व्यक्ति का सुधार समाज के सुधार के बिना लाभकारी और चिरस्थायी नहीं होता। आज व्यक्ति के सुधार की ओर ध्यान नहीं दिया जा रहा है इसीलिए सहुलियत के बावजूद आवाहन (दावत) के अमल में प्रभाव कम होता जा रहा है। कल तक एक अकेला आदमी ही मानव जीवन में क्रान्ति ला देता था क्योंकि उसके कार्यों और सद्व्यवहारों का प्रभावकारी दायरा उसी के व्यक्तित्व तक सीमित नहीं होता था, बल्कि अपना व्यक्तिगत सुधार व पोषण और अपने आवाहन व शिक्षा पर दृढ़ आस्था के साथ गैरों को भी उन्हीं व्यवहार व किरदार और आस्थाओं को अपनाने का निमंत्रण देता था। उम्मत की इस्लाह व तरबियत के खातिर और उसके जीवन से बुराई के तत्व उखाड फेंकने के लिए उसका मन कुढ़ता था। उसका किरदार व अमल दावती *मकासिद और* उम्मत के फायदे के ऐन मुताबिक हुआ करता था। दावती अमल एक पेशा या फैशन न था बल्कि अल्लाह से निकटता का माध्यम था। ऐसे निमंत्रणकर्ताओं की चौपाल में एक क्षण बैठने से या एक नजर देख लेने से दिल की दुनिया बदल जाती थी।

इतिहास में इस प्रकार के अनगिनत उदाहरण मौजूद है कि केवल हृदयवादियों के बैठकों ने जिन्दगी का रूख मोड़ दिया। शरीअत का अनुसरण करने वाले और कर्मठ आवाहको की जीवनी में इस तासीर के आश्चर्यजनक नमूने देखे जा सकते हैं। कुछ सदाचारी और उच्चव्यवहार व अमल के वाहक आवाहकों ने अपनी बैठकों के माध्यम से हृदयों में आश्चर्यजनक परिवर्तन किये हैं। उनमें धार्मिक चेतना और निःस्वार्थता की अलख जगाई। अच्छे–बुरे में अन्तर करने की योग्यता पैदा की। अच्छाइयों को अपनाने की भावना को जन्म दिया। गलत को गलत कहने की हिम्मत पैदा की। इस्लामी इतिहास में अनगिनत ऐसे आदरणीय आवाहक मौजूद है जिन्होंने इस्लाम का एक व्यापी तसव्वुर पेश किया और उसके अनुसार एक ऐसा आदर्श वंश तैयार किया जो सच्चे अर्थों में धर्म का रक्षक और उसकी शिक्षा की किरण है। उन व्यक्तित्वों ने सर्वप्रथम व्यक्तिगत सुधार और आत्मिक शुद्धिकरण पर ध्यान दिया। सुन्नत व शरीअत को अपने जीवन में लागू किया। फिर समाज सुधार का बेडा उठाया और बड़ी युक्तियों व चिन्तन मनन के साथ हालात का मुकाबला किया तथा समाज में फैली हुई अज्ञानता व अनभिक्षता का उन्मूलन किया।

उन इस्लामी आवाहकों के जीवन का विशेष पहलू वास्तव में व्यक्तिगत सुधार व सामूहिक सुधार के मध्य सुन्दर सामंजस्य था। उसी के साथ–साथ सुन्नत का पूरा–पूरा एहतेमाम और मुस्लिम समाज में उसको आम करने का जज्बा भी था। नबी (सल्ल0) की जीवनी और उसके अनुयायिओं के जीवन के आधारित विशेषताओं में यही व्यापक्ता और कथनी–करनी में समानता है। आज इसी की आवश्यक्ता है कि फिक्र व अमल शिक्षा व प्रशिक्षण, आवाहन कार्य और इस्लाम के प्रचार–प्रसार के क्षेत्र में कार्य करने वाले इस्लामी शिक्षा का सही अमली नमूना पेश करें और जिन्दगी के हर पहलू पर उचित व संतुलित शैली में ध्यान दें। आज यदि एक ओर इस्लाम के कुछ तयशुदा पहलुओं और विशेष क्षेत्रों पर ध्यान दिया जा रहा है तो दूसरी ओर महत्वपूर्ण पहलुओं की उपेक्षा की जा रही है।

इस्लाम ने हर अमल की नियत से जोड़ा है फिर हरेक अमल को दूसरे अमल से जोड़ा है। मुस्लिम शरीफ की एक रिवायत इस क्रम और सम्बन्ध की स्पष्ट दलील है, जिसमें आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब खैबर को फतह किया तो कुछ सहाबा (रज़ि0) आप (सल्ल0) के पास आए और कहने लगे अमुक शहीद है, फलाँ शहीद है, यहाँ तक कि एक व्यक्ति के पास उनका जब गुजर हुआ तो उन्होंने कहा फलाँ शहीद है तो आपने उनको मना किया और

टोका फिर कहा हर्गिज नहीं, वह तो परिहार (मालेगनीमत) में से एक चादर चुराने के अपराध में दोजखी है।

(मुस्लिम : 182)

इसी प्रकार अबूकतादह (रज़ि0) की रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) ने एक बार व्याख्यान दिया जिसमें अल्लाह के रास्ते में जिहाद को और अल्लाह पर ईमान को सबसे बेहतरीन अमल करार दिया। एक व्यक्ति खड़ा होकर कहने लगा। ऐ अल्लाह के रसूल! यदि में शहीद हो जाऊँ तो क्या मेरी खताएं मुआफ हो सकती हैं, तो आप (सल्ल0) ने जवाब दिया, हाँ हाँ! क्यों नहीं, बशर्ते कि तुम शहीद हो और तुम्हारे दिल में सब्र और सवाब की नियत भी हो। तुम युद्ध क्षेत्र में आगे बढ़ने वाले हो, भागने वालों में से न हो, फिर आप (सल्ल0) ने पूछा! तुमने क्या कहा था! तो उसने अपनी बात दोहराई कि यदि मैं अल्लाह के रास्ते में शहीद हो जाऊँ तो क्या मेरी खताएं मुआफ हो सकती है? तो आप (सल्ल0) ने कहा, हाँ, बशर्ते कि तुम सब्र करने वाले हो, सवाब की नियत भी हो, क्यों कि जिब्रील अ0 ने मुझसे यही कहा है।

(मुस्लिम : 885)

एक और हदीस है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (रज़ि0) रिवायत करते हैं कि एक व्यक्ति हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) की सेवा में उपस्थित हुआ और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल0)! मैं हिज़रत और जिहाद व सवाब (पुण्य) की उम्मीद पर आपके हाथों बैअत होता हुँ। आप (सल्ल0) ने पूछा क्या तुम्हारे माँ–बाप में से कोई जीवित है? उसने कहा, हाँ! दोनो जिन्दा हैं, तो आप (सल्ल0) ने पूछा क्या तुम्हें सवाब की उम्मीद भी है? उसने कहा हाँ! आप (सल्ल0) ने आदेश दिया कि वापस जाओ, अपने माँ–बाप की सेवा करो।

(मुस्लिम : 6587)

जिन लोगों के जिम्मे बच्चों की देख–भाल है या शिक्षा व पालन–पोषण से जिनका सम्बन्ध है अथवा प्रचार–प्रसार के कामों से जुड़े हैं या वह कोई अन्य दीनी, इस्लामी खिदमत अन्जाम दे रहे हैं तो उन्हें अपनी कार्य शैली में व्यक्तिगत और सामूहिक स्थिति का अन्तर ध्यान में रखना चाहिये। वह धार्मिक आदेशों के अनुसरण में संतुलन का ध्यान रखें और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों पर उचित और संतुलित शैली में ध्यान दें। क्योंकि यही वह संतुलित शैली है जिससे फिक्र व अमल में संतुलन बन सकता है और वह स्वयं इस्लामी शिक्षा की वास्तविक किरणें तथा दूसरों के लिये आदर्श बन सकते हैं। उम्मत की इस्लाह व तरक्की का ये एक कारगर संतुलित तरीका है, इसके के लिए किसी रैली, किसी प्रदर्शन, किसी कमेटी और अभियान की आवश्यक्ता नहीं है।

❑❑

अज़ान कहने की विधि...

खैरुम्मिनन के डबल (मुशद्दद) म को जरा नाक में रोकें इसी प्रकार मिनन्नौम के डबल न को भी कुछ नाक में रोकें।

अर्थ : नमाज सोने से अच्छी है।

याद रहे आवाज लिख कर नहीं समझाई जा सकती, यह लेख केवल सहायता के लिये लिखा गया शुद्ध उच्चारण के लिये जानकार से सीखना आवश्यक है।

पहले दुरुद पढ़ें फिर पढ़ें : अल्लाहुम्म रब्ब हाजिहिद्–अ़वतित्ताम्मति वस्सलातिल् काइमति आति मुहम्मदनिल् वसीलत वल्फज़ीलत वब् असहु मकाममह् मूद निल्लज़ी वअत्तह्।

इकामत

पाँचों वक़्त फर्ज़ जमाअत से पहले इकामत कही जाती है, उस में यही अज़ान के वाक्य पृथक पृथक हल्की आवाज़ से जल्दी–जल्दी कहते हैं, इकामत में पाचों वक़्त हय्य अलल् फलाह के पश्चात "क्द्कामतिस्सलाह" दो बार कहते हैं। फज्र की इकामत भी इसी प्रकार कहते हैं, इकामत में अस्सलातु ख़ैरुम्मिनन्नौम नहीं कहा जाता है। इकामत कहते वक़्त कान में उंगली नहीं देते न हय्य अलस्सलाह , हय्य अलल् फलाह पर दाहिने बाएं मुंह फेरते हैं न इकामत के पश्चात दुआ पढ़ते हैं।

❑❑

किस्त तीन

इस्लाम तलवार से फैला या सद्व्यवहार से?

- अ़ल्लामा सै० सुलेमान नदवी (रह़०)
संकलन- नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

रण क्षेत्र में इस्लाम का निमंत्रण

इस्लाम की शान्तिप्रियता ने ये नियम बनाया है कि यदि किसी विरोधी गुट से जंग की नौबत आ जाए तो रणक्षेत्र में पहुँचकर भी शान्ति तथा समझौते का ध्यान रखा जाए और तलवार द्वारा निर्णय से पहले दो बातें उनके समक्ष प्रस्तुत की जाएं। पहला ये कि कल्मा शहादत पढ़कर मुसलमान हो जाओ और युद्ध से दूर होकर हमारे भाई बन जाओ, यदि ऐसा करो तो तुम धर्म, सत्ता और मान–मर्यादा के समस्त अधिकारों में हमारे बराबर हो जाओगे। दूसरा यदि ये स्वीकार न हो तो अपने धर्म पर स्थिर रह कर हमारी राजनैतिक सत्ता स्वीकार कर लो। इस अवस्था में तुम्हारी हर प्रकार की सुरक्षा का दायित्व हमारे जिम्मे होगा। यदि वह उन दो में कोई बात स्वीकार कर लें तो उनसे लड़ना अवैध है। इस्लामी इतिहास में ऐसी अनेक घटनाऐं हैं कि किसी विरोधी गुट ने इस्लाम धर्म अथवा केवल उसकी सत्ता स्वीकार ली है जिसके कारण खून–खराबे पर विराम और युद्ध क्षेत्र प्रेम–भाईचारे की की खुबसूरत बज्म में परिवर्तित हो गया है।

जो कानून सिरे से अमन पसन्दी और खून खराबे से बचने पर आधारित हो उसको विरोधियों ने इस रूप में प्रस्तुत किया है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) ने लोगों को तलवार के जोर से मुसलमान बनाने की शिक्षा दी। यद्यपि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सिद्धान्त था कि जब सेना को तैयार करते तो कमान्डर को ये उपदेश देते कि ''जब तुम अनेकेश्वरवादियों में से किसी शत्रु गुट से आमने– सामने हो तो उसको तीन बातों में से एक बात को स्वीकारने का निमंत्रण दो, उनमें से जो बात भी वह मान लें तो उनपर आक्रमण करने से रूक जा, उनको इस्लाम का निमंत्रण दो, यदि वह स्वीकार लें तो फिर उससे रूक जा, उसके पश्चात उनसे विनती कर कि वह मुसलमानों के देश में आ जाएं तो उनका वही अधिकार होगा जो मुसलमानों का है, यदि वह न माने तो उनकी स्थिति देहाती मुसलमानों के भांति होगी, कानून उनपर मुसलमानों का लागू होगा परन्तु माले गनीमत[1] और माले ''फै'' में हिस्सा न होगा, जब़ तक वह ज़िहाद में शामिल न हों। यदि वह इस्लाम धर्म न स्वीकार करें तो उनको जिज्या (टैक्स) देकर जिम्मी बनने को कह, यदि वह इसे मान लें तो उससे भी रूक जाओ, अगर वह उसको भी नामंजूर कर दें तो अल्लाह से मदद माँग और युद्ध आरम्भ कर दे।'' (मुस्लिम)

ये वह युद्ध के सिद्धान्त थे जिससे खून–खराबे पर रोक–थाम का इरादा था न कि किसी को विवश करके तलवार की जोर से मुसलमान बनाने का। सह़ाबा (रज़ि0) के दौर में ईरानियों से जब युद्ध आरम्भ हुआ तो मुसलमानों ने तीन दिन तक कुरूक्षेत्र में तलवार नहीं उठाई। हज़रत सलमान फारसी (रज़ि0) जो ईरानी थे तीन दिन तक उन्हें समझातें रहे कि ''मैं तुम्हारी कौम से हुँ मगर देखते हो कि अरब मेरे आदेशों के अधीन हैं यदि तुम भी मुसलमान हो जाओ तो तुमको भी वही अधिकार मिलेंगे जो हमारे हैं और यदि तुम अपने ही धर्म पर रहना चाहते हो तो जिज्या (टैक्स) देकर रह सकते हो परन्तु हमारे अधीन रहोगे।'' (तिर्मिजी)

इससे पता चला कि युद्ध में शत्रु को भी धर्म परिवर्तन पर विवश नहीं किया गया। बल्कि उसके सामने दूसरे रास्ते भी खुले थे।

समामः बिन असाल (रज़ि0) कबीलः बनी हनीफः में से थे और यमामः के रईस थे। समामः (रज़ि0)

1. युद्ध क्षेत्र में पराजित शत्रुओं के छोड़े हुए माल को माले गनीमत कहते हैं।

संयोग से मुसलमानों के एक लश्कर के हाथों गिरफ्तार हो गए और मदीने लाकर मस्जिदे नबवी के खम्भे में बाँध दिये गए। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज के लिए आए तो पूछा कि समामः तुम्हारी क्या राय है? उत्तर दिया, मुहम्मद (सल्ल0)! मेरी राय अच्छी है यदि मेरी हत्या करोगे तो एक खूनी की हत्या करोगे, यदि उपकार करोगे तो एक आभारी पर उपकार करोगे और अगर फिदया (प्राणमुल्य) चाहते हो तो जो माँगो दिया जाएगा। हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) ने कुछ नहीं कहा फिर इसी प्रकार दूसरे दिन और फिर तीसरे दिन प्रश्नोत्तर हुआ। तीसरे दिन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि समामः को छोड़ दो, लोगों ने खोल दिया, वह रस्सी से खुलकर आजाद हो चुके थे किन्तु सच्चाई की जन्जीर उनके पाँव में पड़ गई थी। मस्जिदे नबवी के निकट खजूर के एक बाग में जाकर स्नान किया और फिर कल्मा शहादत पढ़कर मुसलमान हो गए। क्या किसी को जबरदस्ती मुसलमान बनाने का इससे बढ़िया अवसर मिल सकता था? बदर युद्ध के कैदी गिरफ्तार होकर आए किन्तु उनसे ये नहीं कहा गया कि "तलवार या इस्लाम?" कुर्आन ने जंगी कैदियों के सम्बन्धित कहा कि "युद्ध समाप्त होने के पश्चात उन कैदियों पर उपकार धर कर छोड़ दो या फिद्या (प्राणमुल्य) लेकर छोड़ दो।" (सूर : मुहम्मद : 1)

खैबर युद्ध में मुसलमान कुछ किलों पर आक्रमण करते हैं और असफल होते हैं। अतः शेरे खुदा हज़रत अली (रज़ि0) को आदेश होता है कि सेना समेत चढ़ाई करें, वह पूछते है कि ऐ अल्लाह के रसूल (सन्देष्टा)! क्या मैं उनसे लड़ूँ यहाँ तक कि वह हमारे जैसे हो जाएं, कहा दबे पाँव जाओ, यहाँ तक कि उनके युद्ध क्षेत्र में पहुँच जाओ, फिर उनको इस्लाम की ओर बुलाओ, उसमें उनका जो अधिकार होगा वह उन्हें बताओ, खुदा की कसम! यदि एक व्यक्ति को भी अल्लाह ने तुम्हारे माध्यम से सत्य मार्ग पर चला दिया तो वह उससे अच्छा है कि तुम्हारी सम्पत्ति में लाल ऊँट हों, (बुखारी) किन्तु खैबर के यूहूदियों ने इस्लाम कुबूल न करके इस्लामी सत्ता की अधिनता स्वीकार ली और समझौता करके तलवार म्यान में रख ली गई।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक और ऐलान जिसको अनुचित अर्थ में प्रस्तुत किया गया है। आप (सल्ल0) ने कहा कि "मुझे आदेश है कि मैं लोगों से उस समय तक लड़ूँ जब तक कि वह एकेश्वरवाद (तौहीद) को स्वीकार न लें और वह जब मान लें तो उन्होंने अपने प्राण व धन को मुझसे बचा लिया तथा उनकी नियत की पूछ अल्लाह का काम है।" इस कथन का तात्पर्य केवल इतना है कि मुसलमानों से लड़ना तो वैध नहीं परन्तु किसी गैर मुस्लिम कौम से भी लड़ना उसी समय वैध है जब तक कि वह एकेश्वरवाद को स्वीकार न लें और जब उसने ये कर लिया तो फिर उनसे लड़ना अवैध है चाहे वह आक्रमण के भय से कल्मा पढ़ा हो या सच्चे मन से। उसकी जाँच–परख कि उसने किस नियत से कल्मा पढ़ा, इन्सान का नहीं खुदा का काम है। ये एक समझौता आधारित ऐलान है परन्तु कुछ लोग उसे इस अर्थ में लेते है कि मानों इस्लाम का ये आदेश था कि मुसलमान दीवाना होकर तलवार लिए फिरते और जिसको पाते डरा–धमका कर कहते कि कल्मा पढ़ो अन्यथा सर धड़ से अलग कर देंगे। सोचिये यदि यही आदेश होता तो कैदी एकेश्वरवाद को स्वीकार किए बिना आसानी से छूट जाते? पराजित कौमों से इस्लाम नहीं बल्कि कुछ दिरहम का जिज्या (टैक्स) लेकर उनके स्वतंत्र कर दिया जाता? क्या मुसलमानों को ये आज्ञा दी जाती कि "यदि काफिरों का जंगी गिरोह समझौता हेतु झुके तो तू भी झुक जा।"

(सूरः अनफाल : 8)

बल्कि उसके बजाये ये आदेश होता कि जब तक वह मुसलमान न हो जाएं उनसे सन्धि न करना। क्या मुसलमानों को ये ओदश हो सकता था कि "और यदि (रणक्षेत्र में) अनेकेश्वरवादियों (मुश्रिकों)

शेष पृष्ठ 38

भीगी यादें

- नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

मौसम की एक करवट न जाने कितने बदलाव अपने साथ ले आई है। समाँ कुछ ऐसा है कि सब्जियों की तरह हर पौधो ने हरी मुस्कान ओढ़ ली है। नीले अम्बर तले बादल ने सफेद व काले रंग की चादर तान ली है। चाँद तो ऐसा दिखता है मानो अभी दरिया में डुबकी लगा कर आया है। मौसमी फलों ने स्वाद सुगन्ध की खिड़की खोल दी है। हरी चटनी की चटक और उसकी शोख अदाएं ये तय ही नहीं कर पा रही हैं कि मुंगफली संग जाए या पकौड़ी की गोद हरी करें।

आप भी सोच रहे होंगे कि मैं किस मौसम की बात कर रहा हुँ तो जनाब ये बरसात की बाते हैं जिसकी शोख अदाओं ने माहौल ही बदल कर रख दिया है। झमाझम बरखा, काले बादलों से घिरा आकाश, पवन के झोंकों संग झूमता आँगन में लगा नीम का पेड़, और ठण्डी–ठण्डी फुहारों के साथ उठती निम्बोरी की महक अजीब एहसास करा रही है। इन बावरी फुहारों ने बचपन की यादों का किवाड़ खोल दिया है। दोस्तों संग पानी में उछल–कूद, ताल तलैया में मछली पकड़ने के लिये जतन, मेंढ़को के सामूहिक स्वर अभ्यास के दौरान उनके गालों को देखना, धान की बीजो की रखवाली में पंछियो से जोर आजमाई व बुवाई के दौरान कीचड़ से सने रहना और जामुन व अमरूद की चाह में पेड़ों पर बसेरा करना ऐसी यादे हैं जिनको एक बार फिर जी लेने को मन तरसता रहता है।

मगर कितना कुछ बदल चुका है। अब आमतौर पर बूंदे खपरैल के बजाये C.C.D. के शीशे से फिसलने लगी हैं। पकौड़ियों की जगह Cofi ने ले ली है। धानी सावन की निशानियों ने अपना स्वरूप बदल लिया मगर उससे जुड़ी भावनाएं आज भी नहीं बदलीं। खिड़की से देखता हूँ तो छज्जे से टपकती बूंदे दस–बारह बरस पहले मेरे घर की खपरैल याद दिलाती हैं और गांव की भीगी व सौंधी मिट्टी की महक का एहसास लिये मेरी भावनाओं से उलझती हैं। कुल मिलाकर ये एहसास ही तो है जो हरेक मन को बरसात से बाँधता है। मुद्दतें बीत जाएं, गाँवों का स्वरूप बदल जाए, रिश्तों की सूरत बदल जाए और रस्मो–रिवाज पर पाश्चात्य संस्कृति हावी होने लगे मगर सावन–भादो का सोंधापन रूह (आत्मा) मे इस प्रकार घुल गया है कि उसकी भावनाओं की तस्वीर कभी धुन्धली नहीं पड़ती। ये वह मौसम है जो हर वर्ग और हर आयू के लोगों के जज्बातों को एक सुर–ताल कर देता है, तभी तो बरसात की इस रूत में न जाने कौन सा रंग घुला है कि जो बावरे मन को बस नील गगन में उड चलने को कहता है। ❑❑

बिल्ली की समझदारी

जर्मनी में एक कार चालक ने उस समय दांतों तले उंगली दबा ली जब 54 किलोमीटर गाड़ी दौड़ाने के बाद उसने पाया कि बोनट के नीचे एक बिल्ली लटकी हुई है। वह 160 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से ड्राइविंग कर रहा था। हालांकि बिल्ली के पंजों का तलवा मामूली रूप से जला था।

एक्सेल सिडों नाम के इस व्यक्ति ने बर्लिन से कोनिग्स वस्टरहाउसेन कस्बे की 54 किलोमीटर की दूरी तय करने के बाद बिल्ली की आवाज सुनकर गाड़ी रोकी। तब उसे कार के बोनट के नीचे बिल्ली लटकी दिखी। सिडों ने इस अजीबो–गरीब अनुभव को बांटते हुए कहा, 'मैं ऊपर से बिल्ली को नहीं देख सका। जब मैंने नीचे झांकर देखा तो उसके हाथ–पैर जले थे। बिल्ली को निकालने के लिए आपात सेवा को बुलाना पड़ा। बचाव दल ने गाड़ी के अगले पहिये को हटाकर नीचे से बिल्ली को निकाला। सभी लोग यह देखकर दंग रह गये कि इतनी तेज भाग रही गाड़ी में लटकी बिल्ली के सिर्फ पंजों के तलवे जले थे।

बच्चों को डरपोक न बनाएं

- इन्दु उपासना

अक्सर बच्चों की शरारत पर नियंत्रण करने के लिए या उनके जिद्द करने पर कई माताएं उन्हें साधु–बाबा, भूत–प्रेत और राक्षस के नाम पर झूठे किस्से बनाकर सुनाती हैं। इस तरह की बातों से बच्चा डरकर माता–पिता का कहना मान लेता है, किन्तु धीरे–धीरे यह डर बच्चे के मन में स्थायी रूप से अपनी जड़ें जमा लेता है और बड़ा होने पर भी वह आवश्यक रूप से डरने लगता है।

ऐसे ही कुछ लोग अनजाने में चुडैल, जादूगर आदि की डरावनी कहानियाँ सुनाकर **बच्चे** को डरा देते हैं। यह सब बातें जहाँ बच्चे के स्वस्थ विकास में बाधक हैं। वहीं कठोर अनुशासन और जबरदस्ती करने पर भी बच्चे दब्बू व डरपोक बन जाते हैं।

बच्चों का मन बहुत कोमल होता है और बचपन में जो बातें उनके मन में भरी जाती हैं, उसका उनके भावी जीवन पर प्रभाव पड़ता है। माँ अपने बच्चे के साथ ज्यादा समय बिताती है इसलिए माँ को बच्चे का प्रारंभिक गुरु माना गया है।

बाल मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि माँ को बच्चों के साथ भूलकर भी इस प्रकार का व्यवहार नहीं करना चाहिए जो उनके कोमल मन को नुकसान पहुँचाए। बच्चों को किसी भी कार्य के लिए प्यार व विश्वास से समझाना चाहिए। डर दिखाकर बच्चों से काम करवाने से उनका आत्मविश्वास कम होने लगता है और व्यक्तित्व का समुचित विकास नहीं हो पाता है। बड़ा होने पर ऐसे बच्चों के व्यवहार में कई प्रकार की समस्याएं उत्पन्न हो जाती है।

बच्चों के स्वस्थ विकास के लिए यह जरूरी है कि उन्हें परिवार के अन्दर अच्छा वातावरण दिया जाए और यह काम एक माँ ही बखूबी कर सकती है। बच्चों को निडर **बनाने के लिए प्रेरक** गाथाएं सुनाएं और छोटे–मोटे कार्यों की जिम्मेदारी देकर उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने का प्रयास करें। किसी एक गलती के लिए बच्चों को बार–बार झिड़कना या कोई वस्तु टूट जाने पर उनकी पिटायी को प्राथमिकता नहीं देनी चाहिए। अगर बच्चे से कुछ टूट जाए या वह परीक्षा में असफल हो जाए तो डॉटने–पीटने की अपेक्षा उन्हें प्यार से समझाएं और उनका मनोबल बढ़ाएं। खेल–खेल में बच्चों को किसी भी कार्य के अच्छे और बुरे परिणामों के बारे में शिक्षा दी जा सकती है।

बच्चों के साथ निरंतर संवाद बनाकर माता–पिता उनकी भाव–नात्मक आवश्यक्ताओं, कमजोरियों और क्षमताओं के बारे में जान सकते हैं।

इसके माध्यम से बेहतर ताल–मेल के साथ बच्चों के स्वस्थ विकास में माता–पिता महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। विशेषज्ञों का भी मानना है कि बच्चों की बहुत–सी समस्याएं केवल बातचीत से ही दूर हो जाती हैं। इसके लिए जरूरी है कि माँ या पिता में से एक अपने व्यस्त समय में से कुछ समय निकालकर बच्चों के साथ व्यतीत करे।

❑❑

आपका पत्र

अस्सलामु अलैकुम

लग–भग दो वर्षों से सच्चा राही पढ़ रहा हूँ। हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों के उच्चारण तथा अर्थ का सिलसिला बहुत अच्छा है। यदि उर्दू शब्द भी लिखे जाते तो पाठक शब्द की उर्दू लिपि से भी अवगत होते। अगर यह हो जाए तो इसका लाभ दो गुना हो जाएगा।

अप्रैल के अंक में खुद इरादीयत का अर्थ स्वाधिकार के स्थान पर "स्वेच्छा" चाहिये।

हाजी यूसुफ अहमद कुरैशी

आप के पत्र *तथा परामर्श* पर हार्दिक धन्यवाद, इच्छा तथा संकल्प में थोड़ा अंतर है। स्वाधिकार निकटतम अर्थ है स्वेच्छा उससे थोड़ा दूर है, यह अर्थ मैं ने उर्दू हिन्दी शब्दकोष से लिया है।

(सम्पादक)

किस्त चार

ख़वातीने इस्लाम

(इस्लाम में महिलाओं का स्थान)

- अनुवाद : हबीबुल्लाह आज़मी

बाज अधिकारों का विवरण

उन तमाम अधिकारों का विवरण जो इस्लाम ने औरतों को प्रदान किये हैं, इस अवसर पर बयान नहीं किये जा सकते। इस के लिए खुद एक अलग पुस्तिका की आवश्यकता होगी तथा उर्दू भाषा में काफी सामग्री मौजूद है। लेकिन इन में से दो एक का विवरण लिखना चाहता हूँ।

औरतों को निकाह और शादी में जो उनकी उम्र और जीवन का लब्बेलुबाब (सार) है, उन्हें कोई अधिकार नहीं दिया जाता हालांकि नबी (सल्ल0) की हदीसों और शरअी आदेशों के बिलकुल विरूद्ध है। हम ने पहले बहुत जगह जिक्र किया है कि अकदे निकाह (निकाह की प्रतिज्ञा) औरतों का अधिकार है। इस के सम्बन्ध में उन को पूरी आजादी मिलनी चाहिये। रसूल (सल्ल0) का आदेश है ऐयिम उस औरत को कहते हैं जिसके पति न हों अर्थात ऐयिम अपने मामिले में स्वतंत्र है। बेवा और कुंआरी दोनों के लिए स्पष्ट कहा गया है कि उन से उन के मुआमिले में निकाह के लिए इजाजत लेना जरूरी है।

यह ओदश स्वयं स्पष्ट करता है कि निकाह के मुआमिले का सम्बन्ध औरतों से है और इसलिए औलिया और वकलाअ (अभिभावक और वकील) उन से अनुमति लेते हैं तो यह कैसे सम्भव था कि हमारे देश में इस आदेश का पालन न किया जाता कि इसके बिना निकाह हो ही नहीं सकता। लेकिन इस मुआमिले में सब से बड़ी गलती यह की जाती है कि माता–पिता लड़कियों की रजामन्दी और खुशी का कोई ख़्याल नहीं रखते और न उनसे इस सम्बन्ध में राय मशवरा लेते हैं।

इस्लाम ने औरत को एक खास हक दिया है जो महर के नाम से जाना जाता है। बहुत से देशों में और हिन्दुस्तान की बाज कौमों में अब भी यह रीति है कि बहुधा यह माल औरतों की तरफ से मर्दों को दिया जाता है लेकिन ऐसा करना बटवारे के स्वभाव के सिद्धाँत तथा श्रेष्टता के विरूद्ध है। स्वयं मुसलमानों में एक बड़े खलीफा का विचार है कि मर्द औरत के दर्मियान निकाह होने के बाद जो सम्बन्ध कायम होते हैं और मर्द जो संतुष्टि प्राप्त करता है यह माल उस का प्रतिकर (मुआवज़ा) है, मगर असलियत यह है कि मर्दों को घर का मालिक होने की हैसियत से एक प्रकार की श्रेष्टता प्राप्त हो जाती है लेकिन यह स्पष्ट है कि इन दोनों जिन्सों की रचना एक अकेले व्यक्ति से हुई है। (तुम सब को एक ही व्यक्ति से खुदा ने पैदा किया है)

- मौ० अब्दुर्रहमान नग्रामी नदवी

फिर एक बिना प्रतिकर के एक पक्ष को दूसरे पक्ष पर अधिकार देना बराबरी के सिद्धाँत के विरूद्ध है। इस लिए शरीअत ने यह नियम निश्चित किया है कि जिस प्रकार निकाह के कारण औरत एक प्रकार से मर्द के अधीन हो जाती है और यह एक प्रकार की श्रेष्टता है इस के बदले में औरतों को यह श्रेष्टता प्रदान की जाय कि उनको एक धनराशि निश्चित दी जाय कि दोनों में से हर एक को एक–एक श्रेष्टता का अधिकार मिल जाये। दूसरे पर बड़ाई का अवसर बाकी न रहे।

इसलिये कुर्आन मजीद ने उन तमाम आदेशों का वर्णन करने के बाद फ़रमाया (अनुवाद : तुम में से बाज़ को बाज़ पर जो श्रेष्टता दी गई है उस को हासिल करने की कोशिश न करो) यह आयत मर्द औरत दोनों के लिए है क्यों कि इस के बाद कहा गया है (अनुवाद : औरत और मर्द हर एक के लिए उनकी कमाई के अनुसार हिस्सा है) जब यह तय पा गया कि महर असल में उस श्रेष्टता का एवज (प्रतिदान) है जो मर्द को निकाह के जरिये से औरतों पर हासिल होती है, तो फिर उन कौमों का यह नियम सिद्धान्त के विरूद्ध है कि औरत की तरफ से कोई मुआवजा (प्रतिकर) मर्द को दिया जाये। मुल्क के बाज़

क्षेत्रों में जहेज के सम्बन्ध में विचित्र, विचार हैं। इसे मर्दों का हक समझा जाता है। इन के लिए लड़ाइयाँ होती हैं झगड़े बरपा होते हैं लेकिन जहेज का सत्य यह नहीं है, वह माँ–बाप का एक तोहफा (सौगात) है जो लड़की को दिया जाता है उसकी संख्या और मात्रा माँ–बाप की माली क्षमता और शक्ति पर निर्भर है।

इस्लाम ने जो सबसे बड़ा एहसान (उपकार) औरतों पर किया वह उत्तराधिकार (हके विरासत) है। दुनिया की अधिकाँश कौमों ने औरत को उत्तराधिकार से वंचित कर दिया है लेकिन इस्लाम ने उत्तराधिकारियों (वारिसों) में लगभग तमाम औरतों को "ज़विलफुरूज" में गिना है। अर्थात वह लोग जिन के हिस्से शरीअत ने अनिवार्य और जरूरी करार दिये हैं। शरीअत के निश्चित किये गये हिस्सों में सब से बड़ा हिस्सा जायदाद का 2/3 हिस्सा है। इस हिस्से की हकदार औरतों के सिवा कोई और नहीं बताया गया है (मय्यित के अगर केवल बेटिया हैं और वह दो या अधिक हैं तो वह जायदाद का 2/3 पाएंगी उसी में उन सब का हिस्सा होगा) इस का तात्पर्य यह है कि मर्दों को खुदा बन्दे करीम ने रोजी कमाने के तमाम साधन प्रदान किये हैं। औरतें घरदारी के बोझ तले पिसी रहती हैं। उन्हें रोजी कमाने का अवसर बहुधा नहीं मिलता (यद्यपि यह औरतों के लिए जाइज है) शरीअत ने इस बड़ी मात्रा का उत्तराधिकारी बना दिया कि वह रोजी कमाने से मुक्त होकर बच्चों के पालन पोषण में लगी रहें और उन्हें कौम का एक उच्च व्यक्ति माना जाये।

शिक्षा की समस्या

औरतों के सम्बन्ध में जो विवाद पेश हैं, उन में सब से अधिक महत्वपूर्ण कठिन समस्या लड़कियों की शिक्षा है। बहुत से बुजुर्गों ने इस पर धार्मिक रंग भी चढ़ा दिया है। और अधिक से अधिक इतनी अनुमति दी है कि औरतों को मामूली तालीम दी जाये। लेकिन अफसोस इन बुजुर्गों ने न इस्लाम के आदेशों पर गहरी नजर डाली न हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क्रियाकलापों (तर्जे अमल) पर गौर किया और न सहाबा और तबअ़ ताबईन के विचारों को ध्यान पूर्वक देखा यदि देखा होता तो उन को नजर आता कि अति उत्तम युग में औरतों की तालीम का क्या जोर व शोर था। रसूल की पवित्र बीवियों और सहाबा की बीबियों ने क्या–क्या कमालात पैदा किये थे। शिक्षा और कला कौशल में उनका क्या स्थान था। इस्लाम की अनुकम्पा केवल मर्दों ही के लिए नहीं उतरीं औरतें भी उस में बराबर की भागीदार हैं।

हज़रत आयशा (रज़ि0) के ज्ञान व प्रधानता से कौन इन्कार कर सकता है। सहाबा और ताबईन इन से शरअी समस्याओं में परामर्श लेते थे। हदीसों में विभिन्न शरअी समस्याओं के सम्बन्ध में अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि0) जैसे उच्च पद के सहाबी के सम्बन्ध से उनके सही और दिलचस्प एअतिराज़ात मनकूल हैं। जिन से उन के ज्ञान व बुद्धि का पता चलता है। उन की गिनती मुजतहिदीन सहाबा (इस्लाम धर्म शास्त्रवेत्ताओं) में होती थी। केवल यही नहीं और पवित्र बीवियाँ (अजवाजे मुतहेरात) भी कुर्आन के ज्ञान और रसूल (सल्ल0) की सुन्नतों की जानकार और उसके ज्ञान की विशेषज्ञ थीं। अतः औरतों की तालीम एक सुन्नत है जिस के अदा न करने के हम इस समय दोषी हैं।

हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि0) के सम्बन्ध में लिखा गया है कि एक बार हुजूर (सल्ल0) ने फ़रमाया कि जो लोग बैअते तहते शजरः (पेड़ के नीचे बैअ़त) में शरीक हुए हैं उन में से कोई शख्स दोजख (नरक) में नहीं जायेगा। हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि0) ने तुरंत कहा कि कुर्आन मजीद तो कहता है (अनुवाद : तुम में से कोई ऐसा नहीं है जो उस में (दोज़ख) न दाखिल हो। इस ईराद (एअतिराज) को सुनकर हुजूर (सल्ल0) ने अपने कथन की व्याख्या एक दूसरी आयते कुर्आनी से की । क्या आज भी औरतों की तालीम इस दर्जे की होती है कि वह इस प्रकार के भ्रम पैदा करें और मिल्लत के उलमा से उसका जवाब पूछें। यदि नहीं तो क्यों मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत से दूरी इख्तियार की जाती रही है। अगर सच पूछो तो मुसलमानों के पिछड़ेपन का मुख्य कारण औरतों

की जिहालत (अनपढ़ होना) है। अगले ऐसी औरतों की गोद में पलते थे जो वास्तव में ज्ञान व कौशल का दूध पिलाती थीं और मजहब और कौमियत की रूह फूंकती थी। नबूवत के युग से लेकर कई सदियों तक इस का चलन रहा कि औरतें बराबर शिक्षा देतीं, लोग इस से लाभ उठाते और उनके शिष्य (शागिर्द) बनने पर गर्व करते।

इमाम अबूदाऊद बहस्तानी जिन की सुनन सहाएसित्ता में दाखिल है हदीस के फन में एक औरत के भी खोशाचीन (उंछशील) थे। अल्लामा सियूती के अध्यापकों की सूची में बहुत सी साहिबे कमाल औरतें आती हैं। हज़रत उमर (रज़ि0) जैसे महान व्यक्ति अस्मा बिन्ते अमीस से अपने सपनों का स्वप्न फल (तअ़बीर) पूछा करते थे। बाज औरतों ने लेकचर में इतनी महारत हासिल कर ली थीं कि उनको खास पदवी दी जाती थी। अस्मा बिन्ते सकन को आमतौर से खतीब–ए–अंसार की पदवी मिली थी। तसीअ़ बिन काब से उलमा–ए–ताबईन गुस्ले मय्यत की तालीम हासिल करते थे। इन तमाम व्याख्याओं से मालूम होता है कि औरतों की तालीम के सम्बन्ध में जो वाद विवाद हैं वह अक्सर रावियों (कथावाचकों) पर निर्भर हैं। सहाबा और ताबईन का अमल इसके खिलाफ था। बाज अबनाए तालीमें जदीद (आधूनिक शिक्षा के स्कालर) औरतों की तालीम के सम्बन्ध में हदीस (अनुवाद : शिक्षा का प्राप्त करना औरत और मर्द पर फर्ज है) से दलील पेश करते हैं। इस में संदेह नहीं कि इस कथन में मुस्लिमतः का शब्द सही नहीं है लेकिन औरतों की तालीम के लिए इस शब्द की आवश्यकता ही नहीं "मुस्लिम का शब्द खुद आम है मर्दों के लिए कोई खास नहीं है। कुर्आन मजीद और इस्लाम की दावत देने वालों का यह आम तर्ज (शैली) है कि इस प्रकार के मुशतरक (संयुक्त) आदेशों में सम्बोधन मर्दों से होता है लेकिन इन आदेशों में औरतें भी शामिल रहती हैं। इस का सत्यापन (तस्दीक) एक दूसरे कथन से होता है कि एक बार हुजूर (सल्ल0) के पास दो एक औरतें कुछ खास समस्याएं पूछने के लिए आईं। वह पूछने से शर्माती थीं लेकिन जब हुजूर (सल्ल0) को मालूम हुआ तो आप (सल्ल0) ने उन्हें शरअी प्रश्नों के पूछने से और शर्म करने से मना फ़रमाया और यही फ़रमाया कि शरअ़ी इल्म का जानना मुसलमान का फर्ज है। यह कथन हज़रत शाह वलीउल्लाह की लिखी पुस्तक "मुता" में दर्ज है। इस से मालूम हुआ कि मुस्लिम का सम्बोधन मर्द औरत दोनों को आम है। इमाम बुखारी ने एक मुख्य अध्याय औरतों की शिक्षा के लिए लिखा है जिस से अन्दाजा होता है कि उस जमाने में औरतों की शिक्षा की समस्या एक महत्वपूर्ण स्थान रखती थी। शिक्षा के सम्बन्ध में शारे अलैहिस्सलाम ने लगभग हर अवसर पर ख़्याल रखा है चुनानचि एक हदीस में आया है (अनुवाद : जिसके पास कोई लौंडी (सेविका) है, उसने उस की तालीम व तर्बियत (शिक्षा दीक्षा) में सभ्यता और अच्छे व्यवहार में एक खास कोशिश की फिर उसे आजाद करके उस से निकाह कर लिया खुदावन्द करीम उसको दुहरा प्रतिकर देगा।)

यह हुक्म लौंडियों के लिए है लेकिन इस से अनुमान लगा सकते हैं कि तालीम का जिन शब्दों में वर्णन किया गया है उससे यह स्पष्ट होता कि शारे अलैहिस्सलाम ने औरतों की तालीम का किस कदर लिहाज किया। बहरेहाल औरतों की तालीम निःसन्देह एक जरूरी चीज है। मजहब की तरफ से इसके लिए निषेधाज्ञा (इमतनाई हुक्म) नहीं है बल्कि जगह–जगह इस प्रकार का उल्लेख मिलता है जिन से इसके जरूरी होने का संकेत दिया गया है। पढ़ने से अधिक समस्या लिखने की है जिसका खुद हम नबूवत के युग में रिवाज दिखा सकते हैं। पूराने विचारों के लोग इसके कठोर विरोधी हैं हालांकि अबूदाऊद के एक कथन में उल्लेखित है कि हुजूर (सल्ल0) ने एक खास शख्स को हज़रत हफ़्सा (रज़ि0) के लिए नियुक्ति किया था कि वह उन्हें किताब (लिखने) की तालीम दे और इस बिना पर विशेष उलमा ने इसके जाइज होने का फतवा दिया है।

और हमारे नजदीक तो यह भी एक सुन्नत है जिस पर मुसलमानों को अमल करना चाहिये। औरतों के इल्मी कमालात का बयान इंशाअल्लाह हम एक अलग पुस्तिका में लिखेंगे।

❑❑

सैलानी की डायरी

- एम० हसन अंसारी

21 अप्रैल 2010 : "एक सवाल?"

आप एक अफसर के बाप हैं। अफसर के सरकारी निवास पर बीमार पड़े आराम कर रहे हैं। दिन में तीन बजे चिलचिलाती धूप में अफसर के दो मातहत आते हैं, आप के कमरे में लगे कूलर को दुरूस्त करने के लिये, आप को राहत पहुँचाने के लिये, ताकि आप को आराम मिले। काम करने के खट–पट से आप के आराम में खलल पड़ता है। कैसे बदजौक हैं। और ऐसा लखनऊ में!! किन्तु जो आप के आराम का समय है वह लेबर तब्का के काम करने का वक़्त है। वह अपने काम में मुस्तइद, आप अपने काम में मगन। फिर नागवारी कैसी? पर क्या आपने ऐसा किया कि उन दो लेबर्स को खुद अपने हाथ से दो गिलास ठंडा पानी मुहब्बत के साथ पेश किया, यह एक सवाल है?

19 मई 2010 "जागें और जगायें"

" उत्तर प्रदेश के कई पूर्वी और पठारी जिलों में शदीद गर्मी पड़ रही है। प्रदेश में सबसे अधिक तापमान 50 डिग्री सेल्सियस चित्रकूट में रिकार्ड किया गया। चित्रकूट जिला में तेज़ गर्मी के कहर से सैकड़ों पक्षियों और बन्दरों की मौत हो गयी। कामदगिरि पहाड़ी के परिक्रमा मार्ग पर, कामनाओं के पूरा होने की उम्मीद में, परिक्रमा कर रही औरतों में से चार औरतें गिर कर बेहोश हो गयीं। लोगों ने बताया कि पिछले पचहत्तर साल में इस इलाके में कभी इतनी गर्मी नहीं पड़ी है।" यह खबर 20 मई के लगभग सभी अखबारों में प्रकाशित हुई है।

तनिक सोचिये! यह कहीं हमारे कर्मों का फल तो नहीं कि हमारे गुनाहों से धरती गर्मा गई हो!!! ग्लोबल वार्मिंग कहिये, आयरलैण्ड में फूटे ज्वालामुखी की राख हो, अथवा पेड़ों का बेतहाशा कटना हो, वातावरण में बिना रोक–टोक ऊष्मा का विसर्जन हो, यह सब तो कारक हैं, कारण तो स्वयं मानव है, जिसे बनाने वाले ने सर्वोत्कृष्ट प्राणी बनाया, पर वह अपनी राह से भटक गया। क्या अब भी जाग जाने का समय नहीं आया?

20 मई 2010 "परीक्षाफल"

यह समय रिजल्ट आने का है, नतीजों के ऐलान का है। परीक्षाफल घोषित होने का है। यह सिलसिला प्रायः मई महीने से शुरू होकर जून–जूलाई तक हर साल चलता है। इस बार तो इसकी शुरूआत यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन द्वारा 9 मई को सिविल सर्विसेज (आई0–ए0एस0, आई0पी0एस0, आई0–एफ0एस0 आदि) के वर्ष 2009 के परीक्षाफल घोषणा से हुई, तदुपरान्त 19 मई को उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग ने 2009 की सम्मिलित परीक्षाओं (पी0सी0एस0) के नतीजों का ऐलान 19 मई को किया। फिर इस के बाद तो सिलसिला चल निकला, प्राथमिक, पूर्वमाध्यमिक, माध्यमिक शिक्षा परिषद, सी0बी0एस0ई0, आई0सी0एस0ई0, मदरसा बोर्ड, जामिया उर्दू अलीगढ़, संस्कृत में होने वाली वाराणसी बोर्ड की मध्यमा आदि, यूनीवर्सिटीज की डिग्रियों, सी0पी0एम0टी0 विभिन्न तकनीकी डिग्री–डिप्लोमा होल्डर्स और इन कोर्सेज में प्रवेश परीक्षाओं का परीक्षाफल के साथ जूलाई में होने वाली पूरक परीक्षाओं के नतीजो का ऐलान आदि आदि। गोया (मानो) तीन महीनों तक यह सिलसिला चलता रहेगा। इन परीक्षाफलों में अनेक के नतीजों के ऐलान की जिम्मेदारी कम्प्यूटर की अनेक कम्पनियाँ ले लेती हैं जैसे आई0बी0एम0 आदि। इन के लिये यह तीन महीने सहालग के होते हैं जिन में यह कम्पनियाँ खूब पैसा कमाती हैं चूंकि हमारे दीनी इदारों (संस्थाओं) का शिक्षा सत्र शव्वाल से शुरू होकर शाबान तक चलता है, इस लिये वे इस गहमागहमी से स्वतः सुरक्षित रहते हैं। इनके नतीजों का ऐलान रमजान के मुबारक महीने

में होता है जो अपने आप में स्वयं एक बहार का महीना है।

इन परीक्षाफलों में कोई फेल हो जाता है। अधिकाँश पास होते हैं। कोई प्रथम आता है कोई सेकन्ड, और किसी को सिर्फ पास हो जाने पर सन्तोष करना पड़ता है। इधर कुछ वर्षों से लडकियाँ बाजी मारती रही हैं। यह बात लड़कों के आत्मचिन्तन की है कि वह पीछे क्यों रह जाते हैं? कहीं ऐसा तो नहीं कि लड़के निरर्थक बातों में अपना मूल्यवान समय और शक्ति दोनों को नष्ट करने के आदी बनते जा रहे हैं?

नतीजों के ऐलान के बाद कुछ छुट–पुट घटनायें आत्महत्या या आत्महत्या के प्रयास की होती रही हैं, यह एक कायरतापूर्ण कदम है। इसे सही नहीं ठहराया जा सकता।

परीक्षाफल के लिये परीक्षार्थियों में उत्सुकता और कौतूहल का होना एक स्वाभाविक बात है। इस से दिलचस्पी अक्सर इन के माँ–बाप, संरक्षकों, मित्रों और गुरूजनों को होती है। क्या ही अच्छा होता कि यह सब अपने बच्चों के मन–मस्तिष्क के पटल पर अपने–अपने तरीक: से यह सच्चाई बिठा देते कि वास्तव में यह पूरा जीवन एक इम्तेहान है, दुनिया परीक्षा–भवन है, जिसका रिजल्ट सृष्टा (दुनिया का मालिक) उस दिन सुनायेगा जो बदला पाने का दिन होगा। काश हम इस में कामयाब हों!!!

21 मई 2010 "करो मेहरबानी तुम अहले जमीं पर"

परोपकार अच्छी बात है, पर इस से भी अच्छी बात किसी के एहसान को याद रखना है। मेहरबानी ऐसी ही है जैसे बरसात में पानी का बरसना। बरसात का पानी वहाँ–वहाँ अधिक संचित होता है जहाँ–जहाँ की मिट्टी नर्म होती है, जब कि कठोर चट्टान पर पड़ा यही पानी बह कर आगे निकल जाता है। अच्छी और नेक बातों को आत्मसात करने में हमारी मिसाल नर्म और सख्त जमीन की सी है।

उर्दू शायर और साहित्यकार अल्ताफ हुसैन हाली ने तो खुदा की मेहरबानी हासिल करने और उसे राजी करने का एक आसान नुस्खा, अपने इस शेर में बता दिया जो वास्तव में एक हदीस की तर्जुमानी करता है :

करो मेहरबानी तुम अहले जमीं पर
खुदा मेहरबाँ होगा अर्शे बरीं पर

"परहित सरिस धरम नहीं भाई" भारतीय संस्कृति का दुनिया के लिये सन्देश है। यह स्वार्थ को नकारता है, उस की नफी करता है। जीवन को संवारता और सार्थक बनाता है।

फूल खुद महकता है और दूसरों को महकाता है। फूल को सब पसन्द करते हैं, आँखों को भला लगता है, सजावट में काम आता है। हार बनाने में माली उस के दिल में सुई चुभोता है, फिर भी फूल हंसता है, खुशियाँ बिखेरता है :

जावेदाँ है वह जिन्दगी ऐ दोस्त
दूसरों के जो काम आ जाये।

❑❑

शुभचिन्तकों के लाभकर परामर्श

★ जून महीना आया है
जलती गरमी लाया है

● जलती के स्थान पर तपती चाहिये।

✔ मैं ने मई की आग उगलती गर्मी को देख कर जून की गर्मी को जलती गर्मी कहा पाठकों को अच्छा लगे तो स्वीकार करें अन्यथा तपती गर्मी पढ़ें।

★ धान उगें हम चावल पाएं।

● धान अब उगते नहीं इस लिये कि अब रोपे जाते हैं।

✔ शब्द कोषों में उगने के कई अर्थ लिखे है उन में से एक उपजना भी है, मैं ने यही अर्थ लिया है, वैसे पाठकों को अच्छा लगे तो वह "धान बढ़े हम चावल पाएं" पढ़े। इसी प्रकार अब गेहूँ लाइन में लकड़ी से गडढा कर के एक–एक दाना बोया जाता है उस को हम गेहूँ बैठाना कहते हैं।

★ पान ये चूल्हे भाड़ में जाए।

● इस से पनवाड़ी वालों को दुख होगा।

✔ मैं पनवाड़ी वालों से क्षमा चाहता हूँ परन्तु यह अवश्य चाहता हूँ कि विधाता पान तम्बाकू वालों को किसी और लाभकारी साधन से आजीविका प्रदान करे।

★ "इस्लाम तलवार से" के साथ "फैला" भी होना चाहिये (पृष्ठ 21)

✔ "इस्लाम तलवार से फैला" पृथक वाक्य लिखने से गलत सन्देश जाने की आशंका थी। परामर्श के लिये हार्दिक धन्यवाद।

तम्बाकू नोशी ख़ामोश क़ातिल

- मु० गुफरान नदवी

मेडिकल सांइस के रिसर्च के अनुसार तम्बाकू के धुवें में स्वास्थ्य के लिय चार हानिकारक अंश पाये जाते हैं जिनमें "निकोटीन" सर्वप्रथम है, "निकोटीन" इस कदर जहरीला पदार्थ है कि जिसके कुछ कतरे अगर कुत्ते की जबान पर रख दिये जायें तो वह मर जाता है चुंकि "निकोटीन" में उड़ जाने की भी विशेषता होती है इसी लिये तम्बाकू नोशी के समय बड़ा अंश उड़ जाता है, फिर भी कुछ अंश शरीर मे जरूर पहुँचता है, जिसके हानिकारक अंश आगे जाकर सामने आते हैं। निकोटीन से बाजुओं (बाहों) और शरीर में मौजूद खून की नालियाँ सिकुड जाती हैं जिससे शरीर के उन भागों में दर्द हो जाता है। इसके अलावा सिगरेट नोशी, और तम्बाकू के प्रयोग से चाहे वह खाई जाये या पी जाये प्रत्येक सूरत में निम्नलिखित रोगों का खतरा है।

तम्बाकू खाने और पीने से पैदा होने वाले रोग, होंठ, जबान, गले, खूराक की नाली फेफड़ों और मसाने का कैंसर, आमाशय का अलसर, खून की रगों की तंगी, दाँतों और मसूढ़ों के रोग, और त्वचा के रोग शामिल हैं।

कैंसर : मेडीसीन और स्वास्थ्य विशेषज्ञों के रिसर्च से यह बात स्पष्ट हो गई है कि तम्बाकू नोशी कैंसर का महत्व पूर्ण कारक है। कैंसर से होने वाली मौतों में से 30 प्रतिशत मौत का सबब तम्बाकू नोशी बताया गया है, जबकि फेफड़ों के कैंसर का यह सबसे बड़ा कारण है, तम्बाकू के धुवें में काले कणों के रूप में खतरनाक तत्व होते हैं, जिनके रासायनिक अंश फेफड़ों के कैंसर का कारण बनते हैं। पिछले साल दुनिया भर में एक लाख साठ हजार से अधिक लोग इसी बिमारी से मरे। तम्बाकू नोशी करने वालों में लिनठीमिया, गुर्दे, पित्ते और लबलबे के कैंसर का इमकान (संभावना) भी अधिक होता है।

दिल के रोग : अमरीका के हार्टस्पेश्लिस्ट की एस0सी0 एशन का कहना है कि दिल की बीमारी से मरने वाले लोगों में से लगभग चालिस प्रतिशत तम्बाकू नोशी की वजह से इस मर्ज का शिकार होकर मरते हैं, निकोटीन और कार्बन मोनो ऑक्साइड गैस जैसे जर्रात (कण) खून में शामिल हो कर दिल के रोग पैदा होने का कारण बनते हैं, फिर सिगरेट के धुवें से खून की शिरमाने तंग होती हैं और इनजाइना (दर्दे दिल) मर्ज पैदा होता है, कार्बन मोनो ऑक्साइड जिस्म में ऑक्सीजन का अमल रोकती है जिससे दिल की धड़कन बढ़ जाती है, तम्बाकू नोशी से खून का दबाव बढ़ता है और जूं–जूं सिगरेट नोशी में इजाफा होता है दिल के दौरे के इमकानात बढ़ते जाते हैं। एक सर्वे के अनुसार एक ऐसा व्यक्ति जो सिगरेट नोशी तो नहीं करता मगर दिन का आधा धन्टा सिगरेट के धुंवे में गुजारता है, उसमें विटामिन सी जैसे अंश की कमी हो जाती है जो दिल की सुरक्षा के लिये जरूरी है।

अलसर : अलसर का मरीज़ अगर दवाई इलाज से स्वस्थ हो जाता है तो एक साल में अगर वह गिजाई एहतियात न करे तो उसके दोबारा रोग में ग्रस्त हो जाने के इमकानात होते हैं, मगर मरीज सिगरेट नोश हो तो उसे केवल तीन माह बाद ही अलसर होने के इमकानात (संभावना) हो जाते हैं।

त्वचा, दांतों और बालों के रोग: सिगरेट नोशी करने वाले लोगों के दाँत आम तौर पर जल्द खराब हो जाते हैं, जिल्द पर झुर्रियाँ पड़ जाती हैं और बाल समय से पहले ही सफेद हो जाते हैं।

आँखों के रोग : नये रिसर्च के अनुसार जो लोग सिगरेट नोशी करते हैं उनमें आँखों के रोग खास तौर पर बीनाई की कमजोरी और मोतियाबिन्द के इमकानात जियादा होते हैं।

शेष पृष्ठ 7

किस्त : 25

भारत का संक्षिप्त इतिहास

पिछले अंक से आगे..........

मुस्लिम काल

— सै0 अबु ज़फर नदवी

अनुवाद : हबीबुल्लाह आज़मी

पश्चिमी कौमें

पानीपत के मैदान में ऐसी बड़ी पराजय से मरहठों की केन्द्रीय शक्ति टूट गयी। दिल्ली की शहंशाही का सपना बिखर गया। खुद आपस में भी फूट हो जाने से चारो मरहठे सरदार अलग हो गये। भोंसला नागपुर में, गायकवाड़ गुजरात में, होलिकर इन्दौर में, सिन्धिया ग्वालियर में स्वतंत्र होकर सल्लतन करने लगे। इसलिए एक तीसरी कौम को बढ़ने का अवसर मिल गया।

यह लोग यूरोप के रहने वाले थे। एशिया और यूरोप में व्यापारिक सम्बन्ध बहुत जमाने से काईम थे और स्वेज थल डबलू मध्य के मार्ग से आपस में व्यापार करते थे। आठवीं शताब्दी से पन्द्रहवीं शताब्दी तक व्यापार का ढंग यह रहा कि रुम सागर के किनारे रहने वाली कौमें मिस्र, शाम के बन्दरगाहों में आकर हिन्दुस्तान के अनाज फारस या लाल सागर के मार्ग से खरीद कर ले जाती थीं। उन कौमों में से वेंस और जनेवा वाले इस काम में बड़े चतुर थे। हिन्दुस्तान से मिस्र या शाम के बन्दरगाहों तक माल अधिकतर अरब व्यापारी ले जाते थे। पन्द्रहवीं शताब्दी के आखिर में पुर्तगालियों को व्यापार का शौक हुआ। वह जहाज चलाने में बहुत निपुण थे, उनका विचार हुआ कि वह खुद हिन्दुस्तान जाकर क्यों न माल लाएं और पूरा लाभ प्राप्त करें। चुनानचि 1498 ई0 (904 हि0) में वासको डिगामा नामी जहाजी पहली बार अफ्रिका का चक्कर लगा कर रास उम्मीद पहुँचा और फिर वहाँ से असदुलबहर नामी एक मुसलमान जहाज चालक के पथ प्रदर्शन से कालीकट आ गया।

इस मार्ग के मालूम हो जाने से हिन्दुस्तान का व्यापार धीरे–धीरे पुर्तगालियों के कब्जे में आ गया। अरब (मोपलो) को चूंकि उस से बड़ी हानि थी, इस कारण उन के साथ इनकी बड़ी लड़ाई रहती। अरबों (मालाबारी मोपलो) की पराजय हुई और मालाबार के कमजोर राजाओं के कारण पुर्तगाली विजयी हो गये। उन्होंने अपनी छोटी–छोटी बस्तियाँ समुद्र के किनारे–किनारे बसाईं। यह आबादियाँ जब बढ़ गईं तो पुर्तगाल के बादशाह ने उन की व्यवस्था और सुरक्षा के लिए एक हाकिम हिन्दुस्तान भेजा। 1908 ई0 (914 हि0) में दूसरा हाकिम 'अलबूकर्क' नामी भेजा गया यह बड़ा चालाक और बुद्धिमान था। उसने व्यापार को उन्नति देने में बड़ी कोशिश की। उसके बाद सत्तरह वर्षो की अवधि में पुर्तगालियों ने काफी उन्नति कर ली। हिन्दुस्तान के बहुत से बन्दरगाह और द्वीप उनके कब्जे में आ गये। चुनांनचि सोलहवीं शताब्दी के आखिर में जब उनका पतन हो रहा था तो गोवा, संगल द्वीप, हुगली, चालगाम, देव, दमन सब उनके हाथ में था। 1600 ई0 (1009 हि0) में हॉलैण्ड देश के लोगों को जहाजरानी का विचार आया और वह भी हिन्दुस्तान आ कर व्यापार करने लगे। पचास वर्ष की अवधि में हर जगह हॉलैण्ड वाले नजर आने लगे और समुद्री शक्ति के कारण सारे हिन्द महासागर पर उनका कब्जा हो गया। बंगाल का "चनसरा" स्थान उनकी राजधानी थी।

पुर्तगालियों के सफल तजुरबे से यूरोप के हर देश को हिन्दुस्तान से व्यापार कराने का शौक पैदा करा दिया। चुनानचि डेनमार्क, जर्मनी, फ्राँस और इंग्लैण्ड के लोग भी अपने जहाज लेकर हिन्दुस्तान आए लेकिन आपस की फूट के कारण डेनमार्क, जर्मनी आदि के लोग यहाँ न जम सके लेकिन फ्राँसीसी और अंग्रेज बराबर उन्नति करते रहे। 1591 ई0 (1000 हि0) में अंग्रेजों का पहला बेडा रवाना हुआ मगर यह हिन्दुस्तान न पहुँच सका। सम्भवतः रास्ते में डूब गया। 1600 ई0 (1009 हि0) में इंग्लैण्ड की मल्का एलिजाबेथ के जमाने में एक अंग्रेज कम्पनी काइम हुई और उसकी तरफ से व्यापरिक जहाजों का एक बेड़ा हिन्दुस्तान भेजा गया।

1601 ई0 (1010 हि0) में बड़ी सफलता से वापस हुआ। 1696 ई0 (1110 हि0) में एक और अंग्रेजी कम्पनी स्थापित हुई। इस प्रकार 1708 ई0 (1120 हि0) में एक तीसरी अंग्रेज कम्पनी खड़ी हुई।

इन विभिन्न क़म्पनियां में आपस में फूट रहती थी। इसलिए अन्त में यह तय हुआ कि सब अंग्रेजी कम्पनियां को मिलाकर एक ईस्ट इण्डिया कम्पनी कर दी जाए। चुनानचि इस तरह तमाम कम्पनियाँ मिल कर एक हो जाने से अंग्रेजों के आपस में भेद–भाव समाप्त हो गए और यह कम्पनी दिन प्रतिदिन उन्नति करने लगी। जहाँगीर बादशाह के जमाने में इस कम्पनी को चार कोठियाँ बनाने की अनुमति मिली। फिर अंग्रेजों ने कर माफ कराकर व्यापार को बड़ी उन्नति दी।

1668 ई0 (1048 हि0) में शाहजहाँ ने बाटन नामी एक डाक्टर के इलाज से शाहजादी के स्वस्थ होने के इनाम में कम्पनी को व्यापारिक अधिकार प्रदान किये। बंगाल प्रान्त के सूबेदार से भी उसने इसी प्रकार सुविधा प्राप्त की। 1640 ई0 (1050 हि0) में बीजानगर दकिन के हाकिम राम राजा के भाई ने अंग्रेजों को वह जमीन दी जो आज मद्रास के नाम से मशहूर है और इंग्लैण्ड के बादशाह चार्ल्स के हुक्म से वहाँ एक किला बनवाया गया जिसका नाम सेंटजार्ज रखा गया। बम्बई का द्वीप पुर्तगाल के बादशाह की तरफ से इंग्लैण्ड के बादशाह जार्ज द्वितीय की रानी को जहेज के तौर पर मिला और चार्ल्स ने इस द्वीप को कम्पनी के हाथ बेच डाला।

1680 ई0 (1098 हि0) में औरंगजेब ने अंग्रेजों की नीयत देखकर बम्बई के अतिरिक्त तमाम हिन्दुस्तान से उनको निकाल दिया। 1696 ई0 (1108 हि0) में शाहजादा अजीमुश्शान ने फिर उन को आज्ञा दे दी और कलकत्ता उन्होंने खरीद लिया और वहाँ एक किला फोर्टविलियम के नाम से बनवायाँ इस तरह से अंग्रेज 1700 ई0 (1112 हि0) के समाप्ति पर मजबूती से कलकत्ता, मद्रास, बम्बई में जम गये।

फ्राँसीसी भी अंग्रेजों के साथ–साथ हिन्दुस्तान में आए और कलकत्ता के पास चन्द्र नगर और मद्रास के पास पाण्डिचेरी में अपना केन्द्रीय स्थान बनाया और अंग्रेजों के साथ हर काम में दखल देते रहें। डूपले उनका मशहूर फ्राँसीसी सरदार था जो अंग्रेजों को निकाल कर हिन्दुस्तान में फ्राँसीसी सल्तनत काइम करना चाहता था। यह दोनों कौमें देसी नवाबों और राजाओं की सहायता के बहाने एक दूसरे पर अधिकार पाने की कोशिश करती रहीं। चुनानचि 1750 ई0 (1164 हि0) में फ्राँसीसी प्रभुत्व शाली (गालिब) और अंग्रेज परीशान हाल हो गये लेकिन यह दशा बहुत दिनों काइम न रही। 1752 ई0 (1166 हि0) में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के एक अंग्रेज क्लर्क क्लायू नामी ने कलम छोड़ कर तलवार संभाल ली और धीरे–धीरे तमाम फ्राँसीसी लोगों को पराजित कर अंग्रेजों को शक्तिशाली बना दिया। 1759 ई0 (1172 हि0) में फ्राँसीसी हर जगह पराजित होकर हमेशा के लिए हिन्दुस्तान की सल्तनत से मायूस हो गये और 1769 ई0 (1186 हि0) में फ्राँसीसियों की तमाम व्यापारिक कम्पनियाँ भी टूट गईं और अंग्रेज पूरी शक्ति के साथ उभर कर सामने आ गये।

मुगल बादशाहों के काम

यूँ तो कहने के लिए मुगल खानदान ने 1554 ई0 (926 हि0) से 1857 ई0 (1264 हि0) तक तीन सौ वर्षों से अधिक हुकूमत की लेकिन वास्तव में हुमायूँ से लेकर मुहम्मद मुअज्जम बादशाह तक 160 वर्ष हुकूमत रही। इस के बाद मुगल सल्तनत का बादशाह नाम मात्र शहंशाह रहा।

दुनिया में बहुत कम ऐसा खानदान रहा है जिसके छः बाप बेटे एक के बाद दूसरे योग्य निकले हों। यह गर्व केवल मुगल खानदान को प्राप्त है कि बाबर से लेकर आलमगीर तक योग्य शासक हुए। मुगलिया सल्तनत के काइम होने से हिन्दुस्तान का सबसे अधिक लाभ यह हुआ कि बादशाह गर्दी का खातमा हो गया और सही अर्थों में आलमगीर औरंगजेब हिन्दुस्तान का शहंशाह (सम्राट) था। मुगलिया सल्तनत की पॉलिसी लगभग हर जमाने में यकसाँ रही। वह जबरदस्त फौजी ताकत के कारण हर विपरीत परिस्थिति को अनकूल बना लेते थे और कभी–कभी अपनी बुद्धिमानी

से ऐसी चाल चलते थे कि दुश्मन आज्ञापालन पर मजबूर हो जाता था।

उनके जमाने में ज्ञानात्मक उन्नति बहुत अधिक हुई। लगभग कोई जमाना ऐसा नहीं गुजरा जिस में बुद्धजीवी दरबार में न रहें हों। उस जमाने में मुल्ला मुबारक, हकीम फतह उल्लाह शीराजी, मुल्ला महमूद जौनपुरी, मुल्ला जीवन, उर्फी, फैजी, मुल्ला निजामुद्दीन सेहालवी, मुल्ला अमानुल्लाह बनारसी, काजी मुबारक, हकीम गीलानी, मुल्ला बहरुल उलूम और शाह वलीउल्लाह आदि ज्ञान के रौशन सितारे थे। अबुल फजल, आसिफ खाँ, आजम खाँ, और अल्लामा साअदुल्लाह जैसे वजीर उसी जमाने में थे। खान खाना, खान जमाँ, महाबत खाँ, आजम खाँ, फिरोज जंग, मीर जुमला जैसे बहादुर सिपहसालार रहे और बीरबल, टोडरमल, मानसिंह, जयसिंह अजीत सिंह, जसवन्त सिंह जैसे लोग सल्तनत के सलाहकार थे।

फौज में हर धर्म और हर जाति के लोग शामिल होते थे। हिन्दुओं में अधिकतर राजपूत थे और अन्त में मरहठे भी शक्तिशाली हो गये थे। फौजी व्यवस्था बहुत अच्छी थी। सवारों का दस्ता, पैदल दस्ता, तीर अन्दाज, बल्लम वाले, तलवार चलाने वाले सब अलग–अलग होते। तोप खाना का अफसर मीर आतिश कहलाता। वेतन सबको नगद दिया जाता था। कृषि क्षेत्र में उस जमाने में इतनी उन्नति हुई कि शायद हिन्दुस्तान में इस से पहले कभी न हुई थी। विभिन्न प्रकार के फूल और मेवे के पेड़ काबुल और तुर्किस्तान से मंगवाकर यहाँ लगवाए गये। विभिन्न प्रकार के शाही बागों को देख कर अधिकाँश दूसरे अमीरों ने भी बाग लगाने में रुचि ली और देश में अच्छे–अच्छे बाग तैयार हुए।

इमारतों के बनवाने का सिलसिला अकबर के जमाने में ही शुरु हो गया था लेकिन शाह जहाँ ने तो कमाल कर दिया, ताजमहल जो उसकी प्यारी बेगम का मकबरा है। इस सुन्दरता से तैयार हुआ कि वह दुनिया भर में सबसे सुन्दर इमारत समझी जाती है।

इसके अतिरिक्त हर प्रकार के शाही महल, किले, खानकाहें, सरायें, हस्पताल, पागल खाने इस अधिकता से तैयार हुए कि उन को गिना नहीं जा सकता। दिल्ली और आगरा का लाल किला, दीवाने आम और दीवाने खास आज भी देखने के योग्य हैं। मदरसे तो उस समय बहुत काइम किये गये लेकिन दिल्ली, लखनऊ, जौनपुर, आगरा, लाहौर और अहमदाबाद के मदरसे अधिक मशहूर हैं। मस्जिदों की भी कोई इन्तेहा नहीं। दिल्ली और आगरा की जामा मस्जिद आज भी यादगार के तौर पर मौजूद है। केवल मदरसों और मस्जिदों के लिए ही नहीं बल्कि हिन्दू और मुसलमानों के दूसरे लोकहित के लिए भी बड़ी–बड़ी जायदादें वक्फ (धर्मार्थ दान) की गईं।

व्यापार को तो उस जमाने में बहुत उन्नति मिली। सूरत का बन्दरगाह तो अति विकसित हो गया। व्यापार की दिन प्रति दिन उन्नति के कारण संसार के हर देश के लोग वहाँ मौजूद रहते थे। केवल एक व्यापारी अब्दुस्समद के पास कई सौ व्यापारिक जहाज थे। कारीगरी के लिहाज से हिन्दुस्तान बहुत उच्च स्थान पर पहुँच गया था। ढाका का मलमल पूरे संसार में प्रसिद्ध था। गायन कला के कलाकार हमेशा दरबार में हाजिर रहते। गायन का प्रसिद्ध उस्ताद मियाँ तान सेन उसी जमाने में था।

मुगल राज्य में औरतो को शिक्षा दी जाती थी। मुख्यतः शाही बेगमात को हर ज्ञान का बोद्य होता था। नूरजहाँ बेगम शिक्षा के अतिरिक्त तीर चलाने में निपुण थी। बन्दूक का निशाना भी उस का बहुत अच्छा था। नूरजहाँ के अतिरिक्त गुलबदन बेगम जैबुन्निसा को आज भी एक साहित्यकार की हैसियत से शिक्षा जगत जानता है। उस जमाने के अनुवाद और ग्रंथ अनगिनत हैं। फतावा–ए–आलमगीरी, महाभारत का अनुवाद, वेदों के अनुवाद सब उसी जमाने से सम्बन्ध रखते हैं।

दिल्ली और बनारस में नक्षत्रशालायें भी उसी जमाने में राजा जयसिंह को देख–रेख में तैयार हुईं। डाक का भी अच्छा प्रबन्ध था। काबुल का ताजा मेवा हर रोज उसी डाक से जहाँगीर के लिए आता था। आलमगीर के जमाने में गुजरात से दिल्ली और दौलताबाद की खबरें आसानी से मालूम हो जाती थीं

शेष पृष्ठ 18

स्वतंत्रता संग्राम में मुसलमानों का योगदान

- नजमुस्सकिब अब्बासी नदवी

पन्द्रह अगस्त, अर्थात पराधीनता की बेड़ियों में जकडी मातृभूमि को मुक्त कराने के लिये अपने प्राणों को सहर्ष न्योछावर कर देने वाले अमर सपूतों के बलिदानों को याद करने का पुण्य दिवस तो वहीं खुशियाँ मनाने व तिरंगा फहराने का शुभ दिन भी।

भारत का स्वतंत्रता इतिहास साक्षी है कि सुल्तान टीपू शहीद, सैय्यद अहमद शहीद, इस्माईल शहीद और अशफाकउल्लाह खाँ जैसे वीर सपूतों के बलिदानों के बदौलत आज हम खुली हवा में साँस ले रहे हैं। देश की माटी से अनंत तक प्रेम करने वाले इन रणबांकुरों में राष्ट्र के प्रति गजब की श्रद्धा और भक्ति थी। उन्होंने अपने वतन के लिये खून का एक–एक कतरा बहा दिया। फाँसी का फंदा चूम लिया और फिरंगियों को देश से निकलने पर विवश किया। अतः उनकी अमर गाथा को केवल रस्मी तौर पर याद नहीं करना है अपितु उसे अपनी हर साँस और धड़कन में बसाना होगा। भारत के इन सपूतों ने दासता की बेडियाँ तोडने के लिये जिस प्रकार अपने प्राणों की आहुतियाँ दी हैं, तो कम से कम हमारा भी ये नैतिक कर्तव्य बनता है कि हम उन वीर बलिदानियों की निशानियों को सहेजते हुए उनके सिद्धान्तों, आदर्शों, और मुल्यों को अक्षरशः आत्मसात करें और नई पीढ़ी को भी स्वर्णाक्षरों में अंकित स्वतंत्रता आंदोलन के सहीह व सत्य इतिहास को पढने और उससे प्रेरणा लेने हेतु प्रोत्साहित करें। परन्तु कुछ संधी इतिहासकारों ने भारतीय स्वतंत्रता इतिहास में केवल हिन्दुओं के योगदान का बखान किया है और मुसलमानों के योगदान को पूरी तरह नकार दिया है। वैसे भी इतिहास को झुटला कर पेश करना एक पुरानी कला है। जिसका उपयोग फासिस्ट शक्तियाँ अपने लाभ के लिये करती रही हैं। उनके अनुसार भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में मुसलमानों की कोई भूमिका नहीं है बल्कि उन्होंने तो स्वतंत्रता आन्दोलन के साथ विश्वासघात किया है।

इतिहास साक्षी है कि फिरंगियों के विरूद्ध पहली आवाज़ 1585ई0 में शैख अहमद सरहन्दी ने उस समय उठाई जब न बादशाह को आभास था और न जनता को आशँका थी। आपने आजादी की जो मशाल जलाई थी उस पर लम्बे समय तक उनके अनुयायी अपने प्राणों की आहुति देते रहे। परन्तु उसके बावजूद भी 1707ई0 में हज़रत औरंगजेब आलमगीर रह0 की मृत्यू के बाद देश बिखर गया और लुटेरों के अधीन हो गया। ब्रिटिश साम्राज्य के विरूद्ध जितनी भी जंगे छेडी गई उसके अगुवा मुसलमान ही थे। उस सम्बन्ध में सिराजुद्दौला का नाम गर्व से लिया जाता है जिन्होंने 1700ई0 से 1756ई0 तक अंग्रेजों से बराबर लड़ाईयाँ लड़ीं। उसके बाद भारत का गर्व कहे जाने वाले शाह वली उल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह0 ने कमान संभाली और लम्बे समय तक अंग्रेजो के दाँत खट्टे करते रहे। उन्हीं की प्रेरणा से शेर मैसूर सुल्तान टीपू शहीद ने अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिये। किन्तु विश्वासघातियों ने उनकी उस सफलता को बहुत दूर तक जाने न दिया। उनकी शहादत पर "जरनल मीरस ने कहा था कि आज हिन्दुस्तान हमारा है।" ये सत्य है कि इसके बाद ही फिरंगियों के पाँव अधिकतर स्थानों पर आसानी से जमने लगे। इस घटना के कुछ वर्षों बाद शाह अब्दुल अजीज देहलवी रह0 ने अंग्रेजों के विरूद्ध फतवा क्या दिया उनकी नींदे हराम हो गईं। जगह–जगह आजादी के

शोले भड़कने लगे। हौसलों ने अंगड़ाइयाँ लेनी शुरू कर दीं और उसका सार्थक परिणाम भी दिखाई देने लगा। इसी से प्रभावित होकर उन्नीसवीं सदी के आरम्भ में एक जबरर्दस्त इन्कलाब बरपा हुआ जिस की कमान हज़रत सैय्यद अहमद शहीद रह0 के हाथों में थी। उत्तर भारत से चली ये क्रान्ति देश के अधिकतर क्षेत्रों में फैल गई और उनके समर्थकों के माध्यम से लगातार आधी सदी तक चलती रही। 1872ई0 में अंडमान में लार्ड मीयू को मौत के घाट उतारना इसी क्रान्ति का परिणाम था। कत्ल करने वाले मर्दे मुजाहिद शेर अली को फाँसी पर लटका दिया गया। इस घटना के कुछ माह पुर्व 1871ई0 में स्वतंत्रता सेनानी अब्दुल्लाह पंजाबी को जस्टिस नारमन को मौत की नींद सुलाने के दोष में सूली पर चड़ा दिया गया था।

पश्चिम बंगाल के तीतू मियाँ उर्फ तीतू मीर 1832ई0 में अंग्रेजो के विरूद्ध बड़ी बहादुरी से लड़े और अंग्रेज समर्थक जमींदारों के विरूद्ध जमकर आवाज़ उठाई। प्रथम विश्व युद्ध के आसपास जिन मुसलमानों ने स्वतंत्रता आँदोलन में शिरकत की उनमें मौलाना अबुल कलाम आजाद सबसे आगे थे। मौलाना बाद में राष्ट्रीय काँग्रेस के सबसे बड़े नेता बन कर उभरे। वह मध्य–पुर्व में ब्रिटिश साम्राज्य के विरूद्ध बने कई क्रान्तिकारी दस्तों से भी जुडे थे। उन्होंने ही ''हबीबुल्लाह'' नामी दस्ते की बुनियाद रखी थी। उस क्रान्तिकारी दस्ते के माध्यम से उन्होंने बड़ी संख्या में दूसरे देश के देश प्रेमियों और बुद्धिजीवियों को प्रभावित किया।

भोपाल के मौलाना बरक–तुल्लाह ने न्यूयार्क, पेरिस, टोक्यो, मास्को और काबुल आदि जाकर वहाँ के लोगों को भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में सहयोग के लिये उभारा। सैय्यद उबैदुल्लाह, मुहम्मद अब्दुल्लाह, फतह मुहम्मद और मुहम्मद अली आदि उन क्रान्ति–कारियों में से हैं जिनका नाम दस्तावेज में प्रसिद्ध रेशमी रूमाल आँदोलन के सम्बन्ध में आया। इस आन्दोलन के संस्थापक और सेनापति शेखुलहिन्द मौलाना महमूदुल हसन देवबंदी रह0 थे। जिन्होंने मौलाना अबुल कलाम आजाद डा0 मुख्तार अहमद अंसारी गाजीपुरी, मौलाना उबैदुल्लाह सिन्धी और हुसैन अहमद मदनी जैसे महान क्रान्तिकारियों के साथ मिलकर अंग्रेजों के विरूद्ध जबर्दस्त जंग छेड़ दी जो बहुत हद तक अपने मकसद में सफल भी रही किन्तु यहाँ विश्वासघाती आड़े आ गये जिसके कारण बड़ी संख्या में मुसलमान फौजी और छात्र क्रान्तिकारी गिरफ्तार कर लिये गये और उन्हें कठोर कारावास का दण्ड दिया गया।

1885ई0 में जब काँग्रेस की स्थापना हुई तो उसके प्रारम्भिक चरण में बदरूद्दीन तैय्यब और रहमतुल्लाह सायानी जैसे लीडरों ने काँग्रेस अध्यक्ष पद पर रह कर जंगे आजादी के कारवाँ को और आगे बढ़ाया। उसी दौर में अल्लामा शिब्ली नोमानी, मौलाना कासिम नानौतवी, और मौलाना सेराजी जैसे लोगों ने अंग्रेजों के दाँत खट्टे करने में कोई कसर नहीं छोडी। देश के विभिन्न क्षेत्रों में अल्लामा सैय्यद सुलेमान नदवी, डा0 सैफुद्दीन किचलू, आसिफ अली, मौलाना हसरत मोहानी, लाहौर के डा0 आलम, उत्तर–पश्चिम सीमावर्ती क्षेत्र के खान अब्दुल गफ्फार खाँ, हकीम अजमल खाँ, हकीम नाबीना गाजीपुरी, हकीम अब्दुर्रज्जाक गाजीपुरी, टी0ए0 शेरवानी, जमींदार के सम्पादक मौलाना जफर अली खाँ, अल अमीन के एड़ीटर अब्दुर्रहमान आदि जैसे लोगों ने स्वतंत्रता आन्दोलन में बड़ी कुर्बानियाँ दी हैं।

अली बन्धुओं मौलाना मुहम्मद अली जौहर और मौलाना शौकत अली जौहर को महात्मा गाँधी अपना दोनों हाथ कहते थे उन दिनों महात्मा गाँधी की जय जयकार के साथ अली बन्धुओं की भी जय जयकार होती थी। खिलाफत आन्दोलन में अली बन्धुओं और उनकी माँ बी अम्माँ की बड़ी भूमिका रही है। मौलाना हसरत मोहानी ऐसे पहले काँग्रेसी थे जिन्होंने 1921ई0 में काँग्रेस के सम्मेलन में ''पुर्णस्वतंत्रता'' का प्रस्ताव पेश किया किन्तु काँग्रेस इस प्रस्ताव को

समर्थन देने से बचती रही। 1922ई0 में जमीयतुल उलमा और खिलाफत कमेटी की संयुक्त बैठक में पुर्ण स्वतंत्रता का प्रस्ताव पास किया गया किन्तु यहाँ भी काँग्रेस मौन रही। 1926ई0 में भी अल्लामा सैय्यद सुलेमान नदवी की अध्यक्षता में जमीयतुल उलमा की विशेष बैठक में पुर्ण स्वतंत्रता का प्रस्ताव पास किया गया। आखिर कार थक–हार कर 1929ई0 में काँग्रेस ने पुर्ण स्वतंत्रता का प्रस्ताव पास कर दिया।

1919ई0 में जब जमीयतुल उलमा अस्तित्व में आई तो देश की राजनीति में नया मोड़ आया। 1920ई0 में मौलाना महमूदुल हसन देवबंदी रह0 की अध्यक्षता में स्वतंत्रता आन्दोलन में एक बार फिर मुसलमानों से जम कर हिस्सा लेने की जोरदार अपील की गई कि वह ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा दी गई उपाधि और पुरस्कारों को लौटाएं और ब्रिटिश वस्तु व स्कूलों, कालेजों में उनकी नीति के अन्तर्गत दी जाने वाली शिक्षा का बहिष्कार करें। अतः इस बायकाट का जबर्दस्त प्रभाव पड़ा और लोगों ने जमीयतुल उलमा की अपील की लाज ही नहीं रखी बल्कि अंग्रेजों की कमर तोड दी।

1929ई0 में मुसलमानों ने एक नई पार्टी बनाई। नेशलिस्ट मुस्लिम पार्टी नामक ये सियासी पार्टी अंग्रेजो से दो–दो हाथ करने के लिये बनाई गई थी। मौलाना अबुल कलाम आजाद इसके अध्यक्ष और डा0 मुख्तार अहमद अंसारी गाज़ीपुरी कोषाध्यक्ष बनाये गये। इसी मकसद से पंजाब में मजलिसे अहरार नामक पार्टी बनाई गई जिसके अध्यक्ष अफजलुल्हक थे। इसी प्रकार 1940ई0 तक दस राजनीतिक दल अस्तित्व में आये उनमें खिलाफत कमेटी, कश्मीर नेशनल कान्फ्रेस और मोमिन कान्फ्रेन्स आदि की स्वतंत्रता आन्दोलन में महत्वपुर्ण भूमिका रही है।

ये तो स्वतंत्रता संग्राम में मुसलमानों के योगदान और बलिदान की हल्की सी झलकियाँ हैं। स्वतंत्रता के लिये चलाये जाने वाला कौन सा ऐसा आन्दोलन या युद्ध है जिसमें मुसलमानों ने जमकर हिस्सा न लिया हो? बल्कि अधिकतर आन्दोलन और युद्ध के सेनापति व अगुवा वही थे। केवल मुस्लिम लीग की भूमिका को आधार बना कर स्वतंत्रता संग्राम में मुसलमानों की भूमिका पर फैसला नहीं किया जा सकता। मुस्लिम लीग उसी प्रकार समस्त भारतीय मुसलमानों की पार्टी नहीं थी जिस प्रकार हिन्दू महासभा समस्त भारतीय हिन्दुओं की पार्टी नहीं थी। जिस आर0एस0एस0 और हिन्दू महासभा का जंगे आजादी में खून का एक कतरा भी न बहा और नहीं एक रात के लिये वह जेल गये हों वही आज मुसलमानों पर गद्दारी का इल्जाम लगा रहे है। विश्व में क्या इससे भी बड़ी कोई हास्यापद बात हो सकती है?

❑❑

इस्लाम तलवार से फैला?..

में से कोई तुझ से शरण माँगे तो उसको पनाह दो यहाँ तक कि वह खुदा का सन्देश सुन ले फिर उसको उसके अमन की जगह पहुँचा दो, ये इसलिए कि ये अशिक्षित लोग हैं।''

(सूरः तौबा : 1)

बल्कि ये होता कि शरण मिलने और ईश्वरीय सन्देश (कलामे इलाही) सुनने के पश्चात वह मुसलमान न हो तो शरणस्थान पहुँचाने के बजाए उसे कत्ल करके जहन्नम रसीद कर दो किन्तु ऐसा नहीं है। इससे पता चला कि इस्लाम की शान्ति प्रियता और उदारहृदयता की सच्ची भावनाओं को किस प्रकार उलट–पुलट कर दर्शाया गया है। यद्यपि इस्लाम ने उन अनेकेश्वर वादियों से भी जो हमारे किसी अनेकेश्वरवादी मित्र कबीले के मित्र हों और शान्ति–समझौते के साथ रहना चाहते हों तो लड़ने से मना किया है ''तो यदि वह तुमसे किनारा पकड़े फिर न लड़े और तुम्हारे सामने समझौतावादियों की तरह रहे तो अल्लाह ने तुमको उनपर आक्रमण करने का रास्ता नहीं दिया है। (सूरः निसा) अर्थात उनपर तलवार उठाना वैध नहीं। यदि इस्लामी धार्मिक युद्ध के यही तात्पर्य होते कि ''तलवार या इस्लाम? तो क्या इस अमन पसन्दी, इस सुलहजोई और युद्ध में न लड़ने की नौबत आ सकती थी?

(जारी.....)

❑❑

किस्त 26

हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों का उच्चारण तथा अर्थ

इदारा

नोट : बिन्दी वाले अक्षरों के उच्चारण स्थान, उर्दू वालों से सीखना आवश्यक है।

उर्दू	शब्द	अर्थ
دریافت	दर्याफ्त	पूछ
دریائی	दरयाई	जलज
دریچہ	दरीचः	खिड़की
دست	दस्त	हस्त
دریدہ دہن	दरीदा दिहन	मुंह फट
دریغ	दरेग़	संकोच
دست بدست	दस्त बदस्त	हस्ततः
دستار	दस्तार	पगड़ी
دستار بندی	दस्तार बन्दी	पगड़ी बन्धन
دست اندازی	दस्त अन्दाज़ी	हस्तक्षेप
دستاور	दस्तावर	रेचक
دستاویز	दस्तावेज़	लेख पत्र
دست برداری	दस्त बरदारी	प्रत्याग
دست بستہ	दस्त बस्तः	करबद्ध
دستخط	दस्तख़त	हस्ताक्षर
دستخطی	दस्तख़ती	हस्ताक्षरित
دست رس	दस्तरस	पहुंच
دستک	दस्तक	द्वार खटखटाना
دستکار	दस्तकार	हस्तशिल्पी
دستکاری	दस्तकारी	हस्तशिल्प

उर्दू	शब्द	अर्थ
دست کش	दस्तकश	विरक्त
دستگاہ	दस्तगाह	योग्यता
دستگیر	दस्तगीर	सहायक
دست نگر	दस्तनिगर	आश्रित
دستور	दस्तूर	विधान
دستور	दस्तूर	प्रथा
دستور ساز مجلس	दस्तूरे साज मजलिस	विधान सभा
دستور العمل	दस्तूरूल अमल	कार्यप्रणाली
دستوری	दस्तूरी	वैधानिक
دستہ	दस्तः	टुकड़ी
دستیاب	दस्तयाब	प्राप्त
دشمن	दुश्मन	शत्रु
دشمنی	दुश्मनी	शत्रुता
دشنام	दुशनाम	गाली
دشنہ	दशनः	कटार
دشوار	दुश्वार	कठिन
دشوار گزار	दुश्वार गुज़ार	दुर्गम
دشواری	दुश्वारी	कठिनाई

पाठक जिस उर्दू शब्द का अर्थ जानना चाहेंगे अर्थ सहित छापा जायेगा।

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

– डॉ0 मुइद अशरफ नदवी

पोप ने बिशप का इस्तीफा स्वीकारा

वेटिकन! पोप बेनेडिक्ट 16वें ने अपने क्षेत्राधिकार में पादरियों के यौन शोषण के आरोपों से न निपटने के दोषी पाए गए आयरलैंड के बिशप का इस्तीफा स्वीकार कर लिया है। मैंगी ने एक साल पहले ही दक्षिणी आयरलैंड के क्लोने के बिशप का पद छोड़ दिया था।

पाक से परमाणु करार नहीं : हिलरी

अमेरिका पाकिस्तान की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए वहाँ तीन थर्मल प्लॉट लगाएगा। लेकिन भारत की तर्ज पर उसके साथ कोई असैन्य परमाणु समझौता नहीं करेगा और न ही उसका कश्मीर मुद्दे पर मध्यस्थता करने का कोई इरादा है।

अमेरिकी विदेश मंत्री हिलरी क्लिंटन ने पाकिस्तान के विदेश मंत्री शाह महमूद कुरैशी से पहले दिन की उच्च स्तरीय रणनीतिक वार्ता के बाद संयुक्त संवाददाता सम्मेलन में साफ कर दिया कि पाक से असैन्य परमाणु समझौते का सवाल ही नहीं है।

भारत के मुद्दे पर क्लिंटन ने पाक विदेश मंत्री का कश्मीर सहित द्विपक्षीय मुद्दों के समाधान में अमेरिकी मध्यस्थता के अनुरोध को भी ठुकरा दिया। हिलरी ने कहा अमेरिका किसी देश की विदेश नीति निर्धारित नहीं करता। लेकिन वह हमेशा भारत पाक का उत्साह बढ़ाएगा कि वह वार्ता करें। हिलरी ने तालिबान, आतंकवाद और भारत से जुड़े मुद्दों पर अमेरिका की ओर से अपनी भूमिका न निभाए जाने के सवाल पर कहा कि अमेरिका भारत और पाकिस्तान के बीच बातचीत का समर्थन करता है।

हमारी सुन नहीं रहा पाक : चिदंबरम

लंदन! दुनिया के हर देश पर आतंकवाद का खतरा होने का जिक्र करते हुए गृहमंत्री पी चिदंबरम ने कहा कि सीमा पर आतंकवाद पर लगाम लगाने की भारत की गुहार का पाक पर असर नहीं हो रहा। तीन दिन की ब्रिटेन यात्रा के दौरान बीबीसी को दिए इंटरव्यू में चिदंबरम ने कहा कि अमेरिका, ब्रिटेन को पाक पर दबाव डालना चाहिए कि वह आतंकवाद को प्रश्रय देना बंद करे।

सऊदी में 100 आतंकी बंदी, साजिश नाकाम

रियाद! सऊदी अरब में सुरक्षा बलों ने 100 से ज्यादा संदिग्ध अलकायदा आतंकवादियों को गिरफ्तार किया है। गृह मंत्रालय के प्रवक्ता मंसूर अल तुर्की ने बताया कि सुरक्षा बलों ने आतंकवादियों के तीन समूहों को पकड़ा, जिनमें 58 सऊदी अरब के नागरिक हैं तथा 55 विदेशी हैं। ये लोग देश के तेल प्रतिष्ठानों और सुरक्षा बलों पर हमले की साजिश कर रहे थे। प्रवक्ता ने बताया कि पहले गुट में 101 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया गया। इनमें से 47 सऊदी अरब के तथा अन्य बांग्लादेश, यमन, सोमालिया आदि देशों के हैं। इन लोगों का पूरा नेटवर्क था जो सुरक्षा बलों पर हमले करने में माहिर था।

गरीब जनता–अमीर नेता, यह है प्रदेश का हाल

यू0पी0 की कुल आय 33228 करोड़ रुपये।

प्रति व्यक्ति आय 1600 रुपये वार्षिक।

प्रति विधायक आय 6,00,000 रुपये वार्षिक + अन्य सुविधाएं।

गरीबी रेखा के नीचे जीने वाले लोग

राष्ट्रीय 27.5 प्रतिशत

उत्तर प्रदेश 32.80 प्रतिशत

पर कर्मचारी हैं परेशान

प्रदेश में लिपिक संवर्ग के कर्मचारियों की संख्या सबसे अधिक करीब छह लाख है। नए वेतनमान में वृद्धि अधिकतम मात्र 20 से 25 प्रतिशत ही हुई है।